www.faithbook.in

Faithbook™
ACTIVITIES BEYOND BOOK

1st NOV 2020
Issue 07

BOOK 019

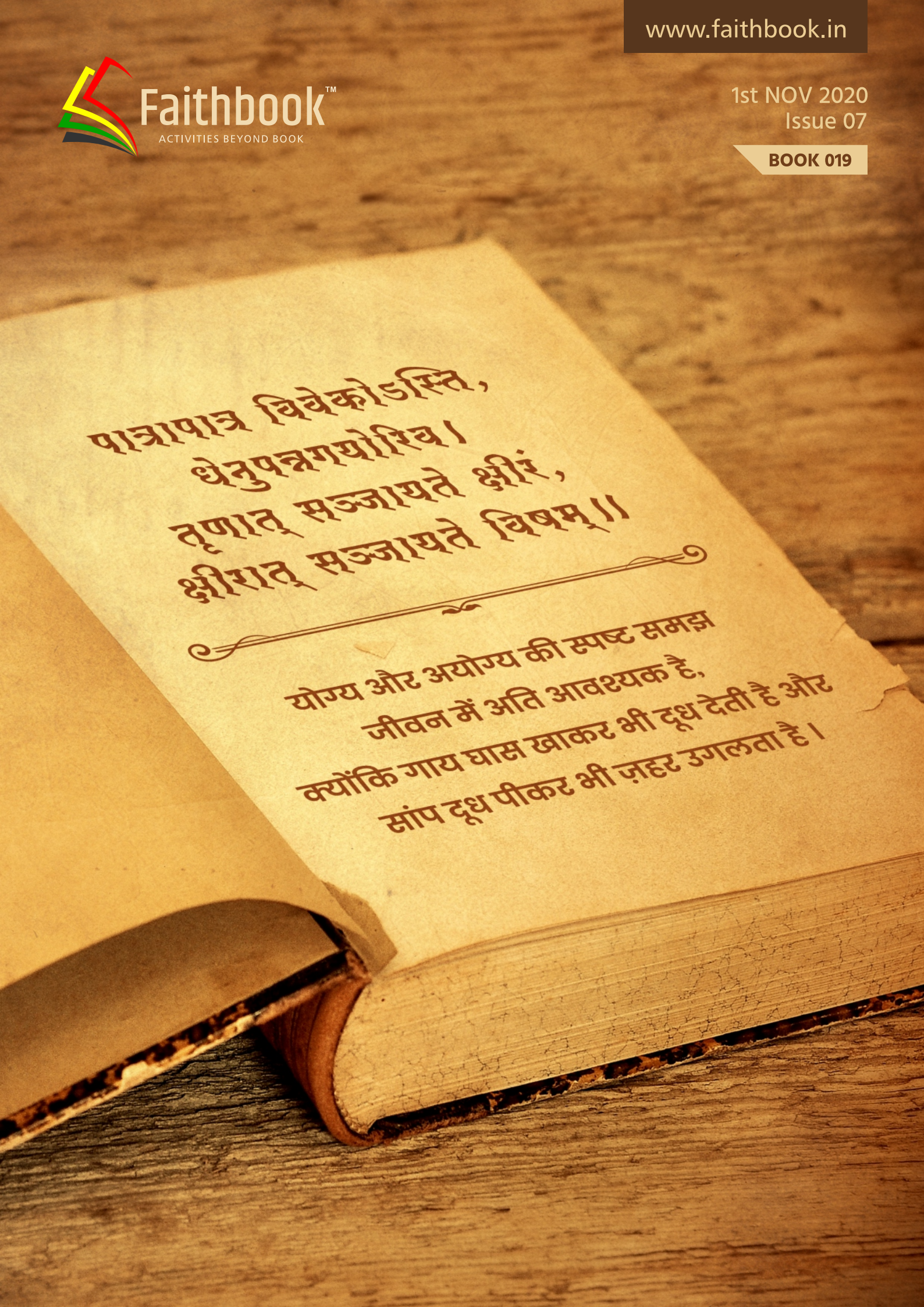

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥

॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥

प्रेरणा

पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक

नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook

शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी

VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

हम पुण्यशाली है...!

सादर प्रणाम,

परम तारक परमात्मा के अनमोल वचन हम तक पहुँचने के लिए भी असीम पुण्य का उदय होना जरुरी होता है। अगर पहुँच भी जाए तो उसका उचित मूल्य समझने वाले बहोत कम लोग होते हैं। उसकी अतुल्यता व अमुल्यता हम तभी जान पाएंगे जब उसके गर्भितार्थ तक हम पहुँच पाएंगे। किंतु हर तबके पर विविध अंतरायो का सामना हमें करना पड़ता है। Faithbook के माध्यम से हमारे ज्ञान क्षयोपशम में वृध्दि करने का कार्य अविरत चल रहा है और सभी पाठकों का प्रेम उसे मिलता आ रहा है। इसका लाभ लेते रहे और योग्य अभिप्राय भी हम तक पहुँचाते रहे।

हम सभी गुरु भगवन तो को कृतज्ञता पूर्वक वंदन करते हैं और उनका ऋण स्मरण करते हैं एवं सभी पाठकों को भी अभिनंदन देते हैं कि आप यह सद्वाचन करते रहो और आगे भी करते रहिए।

– नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

मनोरंजन का मानसरोवर 01
पू. आ. श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

सहज क्षमा का धारक मैं युधिष्ठिर हूँ 05
पू. आ. श्री आत्मदर्शन सूरिजी म.सा.

सर्वस्वीकार की साधना 09
पू. पं. श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

Everything is Online, We are Offline – 2.0 11
पू. मु. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

एक स्वप्न देखते है 14
प्रियम्

आज्ञा चक्र ध्यान 17
पू. मु. श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा.

Power of Unity 20
पू. मु. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

माहिती V/S ज्ञान 24
पू. मु. श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

शत्रु भी सुखी बने 26
पू. मु. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Temper : A Terror – 6 28
पू. मु. श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

FaithbookOnline

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English & Hindi on our website's blog Visit : www.faithbook.in

मनोरंजन का मानसरोवर

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

एक बार के लिए मानिए कि आपकी वार्षिक आमदनी 10 लाख रुपये है, और पूरे वर्ष का कुल खर्च 8 लाख रुपये हैं। मतलब 2 लाख रुपये शुद्ध बचत है। पिछले अनेक वर्षों से यही सिल-सिला चल रहा है। तो क्या आप मुझे बताएँगे, कि सारा खर्च निकल गया, एक पैसे का भी पेमेंट बाकी नहीं है, ये दो लाख Extra ही है, तो इसे गटर में डालो न !! क्या आपने ऐसा कभी किया है?

'नहीं'

'क्यों? सारे Extra ही तो है, डाल दो गटर में।'

'महाराज साहेब ! पैसे हैं। गटर में ही डालने होते, तो ज्यादा कमाते ही क्यों? इसकी तो बचत करनी होती है। सुरक्षित रुप से बढ़ता रहे, इस प्रकार Investment करना होता है, ताकी भविष्य में काम आए।'

'मैं भी आपसे यही कहना चाहता हूँ, कि दिन के 24 में से 22 घण्टे तो Occupied हैं, दो घण्टे का Extra Time है, ऊपर से पूरी दुनिया तो यही कहती है कि Time is more than money. यदि Extra money को गटर में नहीं डाल सकते तो Extra time को गटर में कैसे डाल सकते हैं? हालाँकि Time को बचाकर इकट्ठा तो नहीं किया जा सकता, इसलिए हमारे पास दो ही विकल्प बचते हैं, या तो Invest करें, या गटर में डालें।'

'साहेब जी ! हमारे यहाँ तीन शब्द हैं, दुरुपयोग, उपयोग और सदुपयोग। Extra वाले दो घण्टे हम TV या Mobile में सीरियल या मूवी देखकर बिताते हैं। भले ही यह सदुपयोग नहीं है, पर दुरुपयोग भी तो नहीं है। मात्र उपयोग है, क्योंकि हमें इससे मनोरंजन मिलता है। इसलिए इस Extra Time को हम न तो Invest कर रहे हैं, न

ही गटर में डाल रहे हैं, बस खर्च कर रहे हैं - क्या ऐसा नहीं कह सकते?'

'देखिए भाग्यशाली ! रोटी, कपड़ा और मकान आदि जीवन की आवश्यक वस्तुओं में जो पैसा जाए, उसे खर्च या उपयोग कहते हैं।'

'महाराज ! आप तो संयमी हैं, त्यागी हैं लेकिन हम सांसारिक हैं, हमारे लिए तो मनोरंजन भी जीवन-आवश्यक वस्तु ही हुई न?'

'पुण्यशाली ! मनोरंजन (आनन्द) तो हमारे लिए भी आवश्यक है। किन्तु यह आनन्द कैसे प्राप्त करना? सूअर विष्ठा में लोटकर आनन्द प्राप्त करता है, राजहंस मोती का चारा खाकर, मानसरोवर में सैर करके आनन्द प्राप्त करता है।'

'महाराज साहेब ! TV, मोबाइल आदि मानसरोवर है या गटर?'

'आप ही बोलो !! शराब के नशे में चूर व्यक्ति गटर में गिरेगा या मानसरोवर में?'

'लेकिन साहेब ! शराब तो व्यसन है, और व्यसन तो गटर ही होती है।'

'शराब को व्यसन क्यों कहते हैं? इसमें तो शराबी को और कहीं से न मिले, ऐसा आनन्द मिलता है। क्या इस आनन्द को जीवन-आवश्यक आनन्द नहीं कह सकते?'

'महाराज साहेब, शराब इसलिए व्यसन है, क्योंकि:

(a) शराब की तलब लगने पर शराबी को शराब के अलावा और कुछ नहीं दिखता,

(b) जिस कार्य से बहुत लाभ हो सकता हो, ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य को दरकिनार करके वह शराब की ओर भागता है,

(c) उस समय यदि उसे कोई शराब पीने से मना करे तो वे सब उसे अपने शत्रु लगते हैं, उसका बस चले तो वह उनके साथ मार-पीट के लिए भी तैयार हो जाए,

(d) शराबी जग रहा हो और घर में चोर घुसकर चोरी कर ले, तो उसे कुछ पता नहीं चलता, वह चोरी होते हुए रोक नहीं सकता,

(e) शराबी घर में आए मेहमान का योग्य सत्कार नहीं कर सकता,

(f) शराब से समय का, आरोग्य का, सम्पत्ति का और परिवार का नाश होता है,

उपरोक्त अनेक कारणों से शराब को व्यसन कहते हैं।'

'देखिए भाग्यशाली! उपरोक्त कारणों से तो मोबाइल व्यसन ही नहीं महाव्यसन है। आपकी बताई छः की छः बातें मोबाइल पर अधिक असरदार तरीके से लागू होती है। यह पढ़कर देखिए, फिर कहिए कि इसे महाव्यसन कहें कि नहीं:

(a) आदमी खाली समय में मोबाइल में यू-ट्यूब

और गूगल आदि पर कुछ न कुछ Search करता है। इसमें By Chance कोई अश्लील site खुल जाए तो 99.99% chance है कि उन्हें यह देखना पसन्द आएगा। क्योंकि अनादिकाल के संस्कार वह लेकर आया है। पसन्द आया, मतलब अब वह उसे दूसरी, तीसरी और चौथी बार देखने का मन होगा ही। और यह बात कब व्यसन बन जाएगी, यह पता भी नहीं चलेगा। फिर बस वही तलब बार-बार उठेगी, कि एकान्त मिले, और देखूँ।

इंस्टाग्राम आदि पर कोई अपरिचित वि-जातीय से परिचय हो जाए, फिर तो बस उसके साथ ही सम्पर्क करते रहने का व्यसन इतना गाढ़ हो जाता है, कि रात के एक बजे भी मोबाइल बन्द करने का मन नहीं होता।

PUBG आदि गेम के व्यसन तो जग-जाहिर है।

खाना खाते समय बालक इधर-उधर ना दौड़े इसलिए उसके हाथ में मोबाइल पकड़ा दिया जाता है। और देखते-देखते उस बालक को भी यह व्यसन हो जाता है। अब बिना मोबाइल के वह खाना भी नहीं खा पाता।

(b) दसवीं या बारहवीं कक्षा की पढ़ाई हो, तो भी Students मोबाइल नहीं छोड़ सकता। ऐसा ही अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों में होता है। TV पर IPL की Live Telecast हो रही मैच देखने में ऑफिस आदि के कितने कार्य ठप्प हो जाते हैं? यह बात किसे पता नहीं है।

(c) PUBG खेल रहे बेटे को यदि माँ कोई काम के लिए कहे, तो उसे अपनी माँ भी दुश्मन जैसी लगने लगती है। दसवीं में पढ़ने वाली लड़की को मोबाइल में टाइम न बिगाड़ने के लिए पिता बार-बार कह रहा था, तो 'प्यार की नदी' कहलाने वाली बेटी ने पिता की हत्या कर दी ऐसी घटनाएँ भी बन चुकी है।

(d-e) TV और मोबाइल में मशगूल व्यक्ति न तो घर में हो रही चोरी रोक सकता है, न ही उचित अतिथि सत्कार कर सकता है, यह बात बहुत लोगों को अनुभवसिद्ध है।

(f) TV और मोबाइल में घण्टों का समय बर्बाद होता है। Online Education से बच्चों को आरोग्य की समस्याएँ होने लगी है। मैदान की खुली हवाओं में खेलना बन्द हो गया होने के कारण अनेक लोग स्वास्थ्य-लाभ से वंचित हैं। देर रात तक जगने के कारण स्वास्थ्य का तो कचूंबर निकल चुका है, ये सब बातें कौन नहीं जानता?

उपरोक्त अनेक कारणों से मोबाइल महाव्यसन है, गटर के समान है। फिर पैसे से भी अधिक मूल्यवान समय को इस गटर में क्यों डालना?

जिसे इस गटर में लोटने का मन होता रहता हो, उसी में उसे मजा आए, क्या वह सूअर नहीं है?

इससे बेहतर तो क्यों न मानसरोवर का राजहंस बनें?

Extra Time में प्रभुभक्ति, सामायिक, जाप, स्वाध्याय आदि करने वाले वस्तुतः मोतियों के दाने चुग रहे हैं। क्योंकि इन सबसे उसे मन, वचन, काया और आत्मा, सभी स्तरों पर अद्भुत लाभ होता है।

प्रश्न : हमारे जीवन के लिए मनोरंजन भी आवश्यक है, इन सब में मनोरंजन कैसे मिलेगा?

उत्तर: इन सबमें अपरम्पार मनोरंजन (आनन्द) भरा हुआ है। **मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे...** प्रभुजी की पूजा-भक्ति करने से प्रसन्नता की लहरें उठती हैं। सामायिक का अर्थ है समताभाव। मन को disturb करने वाले पदार्थ तो क्रोधादि कषाय हैं। समता में वे शान्त हो जाते हैं, इसलिए मन में ठहराव आता है, मन शान्त-उपशान्त बन जाता है। मन की शान्ति से बड़ा कोई और सुख है दुनिया में?

जाप में एकाग्र बना चित्त समस्त चिन्ता, विषाद, आघात और व्यथा को भूल जाता है, फिर सुख और आनन्द की अनुभूति क्यों नहीं होगी?

स्वाध्याय तो आनन्द का खजाना है, जिसके साथ तो 12 वर्ष तक भोग-विलास किया, जिसका अल्प-विरह भी मन को मंजूर नहीं, ऐसी रूप-सुन्दरी कोशा वेश्या के प्रेमालाप, नृत्य, अंगोपांग, कामोत्तेजक बातें, उन्मादजनक गीत-संगीत स्थूलिभद्र महामुनि को इनका जरा भी आकर्षण नहीं हुआ, स्पर्श नहीं हुआ ऐसा आकंठ आनन्दानुभव उन्हें स्वाध्याय में हो रहा था।

प्रश्न: हमें तो इन सबमें आनंद अनुभव नहीं होता, मात्र नीरसता लगती है, इन सबसे आनन्द कैसे प्राप्त करें?

उत्तर: वैसे तो अमेरिकी लोगों को क्रिकेट में जरा भी मजा नहीं आता, उन्हें यह नीरस खेल लगता है। तो क्या आपको भी क्रिकेट नीरस लगता है? मालिक के रहते घर में चोरी हो जाए या BPसे बढ़कर हार्ट अटैक भी आ जाए तो कुछ पता ना चले इस हद का क्रिकेट में तो आपका पागलपन होता है।

इसके कारणों पर आगे विचार करेंगे, कि किसी को जिस बात में आनन्द नहीं बल्कि त्रस्तता अनुभव होती हो उसी बात में दूसरे को आनन्द का अतिरेक कैसे आता है?

फ़िलहाल बात यह है, कि जीवन में मनोरंजन, सुख और आनन्द आवश्यक है, यह बात सही है, लेकिन यह सब प्राप्त करने का मार्ग मानसरोवर के राजहंस जैसा होना चाहिए। Extra Time को उसकी भाँति बिताना चाहिए। एक सुभाषित में कहा है:

काव्यशास्त्रविनोदेन, कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रया कलहेन वा ।।

अर्थ: बुद्धिमान पुरुषों का समय काव्य, शास्त्र, स्वाध्याय आदि में व्यतीत होता है, जबकि मूर्खों का समय व्यसन, विषय प्रवृत्तियों, निद्रा और झगड़े में बीतता है।

फिर से याद कर लें, Extra पैसे गटर में नहीं डाल सकते, तो पैसे से अधिक मूल्यवान Time को भी गटर में नहीं डाल सकते।

सहज क्षमा का धारक मैं युधिष्ठिर हूँ

पूज्य आचार्य श्री आत्मदर्शन सूरिजी म.सा.

मैं युधिष्ठिर पांच पाण्डवों और सौ कौरवों में सबसे ज्येष्ठ भ्राता हूँ। पुत्र के लक्षण पालणे में दिखाई दे जाते हैं। मेरा परिवार पुण्यशाली था और ऐसे परिवार में मेरे जैसे गुणवान का जन्म हुआ, मानो दूध में शक्कर मिली और शिखर पर ध्वजा खिली। ज्येष्ठ सन्तान के रूप में मुझे हस्तिनापुर का ताज मिला। सत्यशीलता और सौजन्य-शीलता ये मेरे दो सबल हथियार थे, जो दुर्योधन के पास नहीं थे। यद्यपि दुर्योधन भी थोड़ा सौजन्य-शील था, किन्तु उसमें स्वार्थ की गन्ध आती थी। मैं जन्म से ही शान्त और धैर्यवान था। मेरा जन्म शुभ-स्वप्नों से सूचित था, मेरे गर्भ में आने के बाद माता कुन्ती को अत्यन्त शुभ विचार आते थे। कभी माता के शुभाशुभ विचारों की असर पुत्र पर पड़ती है, तो कभी पुत्र के शुभाशुभ पुण्य की असर माता पर पड़ती है। चतुर्भंगी करें तो :

(1) उत्तम माता - उत्तम पुत्र,
(2) उत्तम माता - मध्यम पुत्र,
(3) मध्यम माता - उत्तम पुत्र,
(4) अधम माता - अधम पुत्र,

माता उत्तम हो तो पुत्र पर उसकी अच्छी असर होती है, और गर्भ यदि उत्तम हो तो उसकी असर भी माता के आचार-विचारों पर पड़ती है। दुर्योधन की माता गान्धारी उत्तम थी। बेशक दुर्योधन अधम था, लेकिन मैंने कभी भी अपने जीवन में दुर्योधन को अधम के रूप में नहीं देखा, यही मेरी महानता थी। इसके विपरीत दुर्योधन मुझे मार डालने के विचारों में रहता था। जहाँ दूसरे के बारे में विचार नहीं, वहाँ अधमता पनपती है।

शास्त्रग्रन्थों में

(1) अपकारी के प्रति क्षमा,
(2) उपकारी के साथ क्षमा,
(3) विपाक क्षमा,
(4) आज्ञा क्षमा,
(5) स्वाभाविक क्षमा

धर्मराज युधिष्ठिर

यह पांच प्रकार की क्षमा बताई गई है। इनमें पांचवीं स्वाभाविक क्षमा को उत्तम ही नहीं अपितु सर्वोत्तम कहा गया है। यह क्षमा मुझमें जन्मजात थी। जो क्षमा उत्तम साधु में होती है, वह क्षमा गुण मुझ में था। ऐसी क्षमा, सत्यनिष्ठा और वचन पालकता जैसे गुणों के कारण लोग मुझे धर्मराज कहते थे। मैं वास्तव में धर्मराज ही था।

एक सत्य घटना बताता हूँ:

एक बार जब हम वनवास में थे, तो हमें मार डालने के प्लान के साथ वन में दुर्योधन, कर्ण और उनकी पूरी पलटन उतर गई। उन्होंने वन में किसी विद्याधर के महल पर जबरदस्ती कब्ज़ा किया, तो विद्याधर ने अपनी सेना के साथ उन पर हमला करके दुर्योधन आदि सबको बंदी बनाकर एक कमरे में बन्द कर दिया। इस बात का पता दुर्योधन की पत्नी भानुमति को चला, तो वह भीष्म पितामह के पास गई। पितामह बोले, कि तेरे पति को छुड़ाने की ताकत मात्र पाण्डवों में ही है, इसलिए तुम उनकी शरण लो।

भानुमति वन में हमारे पास आई। भीम और अर्जुन तो उसकी बात सुनते ही आक्रोश में आ गए, कि जो हमें मारने आया था, उसे किसी भी हालत में नहीं बचाना चाहिए। किन्तु मैं तो धर्मराज था, इसलिए भानुमति की सहायता करने का मैंने निर्णय लिया। जिस विद्याधर ने दुर्योधन आदि को बंदी बनाया था, वह अर्जुन का मित्र था, इसलिए मैंने यह कार्य अर्जुन को सौंपा। अर्जुन आज्ञाकारी और बड़ों के प्रति विनयवान था। मैंने शेष पाण्डवों को कहा, कि आपस की लड़ाई में हम पांच और दुर्योधन सौ हैं, लेकिन जब बाहर से आपत्ति आए तो हम एक सौ पांच हैं, सभी एक हैं। फिर अर्जुन उस विद्याधर से मिला और दुर्योधन आदि को उसके बन्धन से छुड़वाया। इस प्रकार दुश्मन को भी सहायक बनने की वृत्ति भी मैंने उदारतापूर्वक अपनाई।

मेरे दो भाई, नकुल और सहदेव की माता माद्री थी और माद्री के भाई मद्रराज शल्य थे। जब युद्ध में हम पाण्डवों ने मद्रराज को अपने पक्ष में जुड़ने का सन्देश भेजा तो मद्रराज स्वयं हमसे मिलने हेतु आए। बहुत समय के बाद मामा-भांजो का मिलना हो रहा था। परस्पर औचित्य करने के बाद मद्रराज ने अपनी बात पर प्रकाश डालते हुए कहा, "युधिष्ठिर ! मुझे तुमसे कहने में शर्म आती है, फिर भी तुम न्यायप्रिय हो, इसलिए प्रेम से मेरी बात सुनना। तुम्हारी ओर से आया हुआ दूत मुझे युद्ध हेतु निमन्त्रण देता, उससे पहले दुर्योधन ने सहायता के लिए बुलावा भेज दिया था। और उसकी बात मैं स्वीकार कर चुका था। इसलिए मैं उसके प्रति वचनबद्ध हूँ। अब मैं धर्मसंकट में फंस गया हूँ, क्या करूँ?"

मैंने कहा, "मामाश्री ! आपका वचन योग्य है, आप इस मामले में जरा भी चिन्ता न करें। क्योंकि हमारी ही तरह दुर्योधन भी आपका भांजा होता है। आप उसकी सहायता करें, इसमें मुझे कोई ऐतराज नहीं है। आप खुशी से अपने वचन का पालन कीजिए।"

मेरी यह उदारता देखकर उस समय मद्रराज शल्य नतमस्तक हो गए। सच में पूरे कुरुवंश में यदि कोई खलनायक था, तो वह दुर्योधन ही था, और यदि कोई हीरो था तो धर्मराज के रूप में मैं ही था। यह मेरी बड़ाई नहीं, बल्कि वास्तविकता है।

अभी भी मेरी गुणगरिमा देखनी हो, तो यह कुरुक्षेत्र के मैदान पर भी देखने को मिलेगी। जब कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में दोनों पक्ष अपनी-अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ सुसज्जित होकर खड़े थे, और युद्ध शुरु होने में एक-दो घड़ी का ही

समय था, उस समय अर्जुन ने अपने गाण्डीव धनुष से ऐसा टंकार किया, कि क्षण भर के लिए तो सबके कान बहरे हो गए। किन्तु उसी समय मैं अपने रथ से नीचे उतरा, और एक भी शस्त्र हाथ में लिए बिना, पैदल चलकर प्रतिपक्षी कौरव सेना की और आगे बढ़ा। मुझे इस प्रकार जाते हुए देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए। श्रीकृष्ण आदि को भी संशय हुआ, कि कहीं ये धर्मराज इस महासंग्राम के महासंहार को ध्यान में लेकर दुर्योधन को हस्तिनापुर का राज्य सौंपने और स्वयं

स्वैच्छिक निवृत्ति लेने तो नहीं जा रहे? दोनों पक्ष के लोगों में ऐसे अनेक तर्क-वितर्क होने लगे।

इतने में मैं कुरुवंश के बड़े भीष्म पितामह के पास पहुँचा, उनके चरण स्पर्श करके उनको भावपूर्वक नमस्कार किया। उसके बाद द्रोणाचार्य और कृपाचार्य आदि गुरुजनों और बड़ों को नमन किया। उस समय मेरा यह श्रेष्ठ कोटि का विनय देखकर भीष्म-द्रोणादि बड़े लोग भी शर्मिन्दा हो गए, और उन्होंने मेरे सर पर हाथ रखकर आशीष दिया, **'विजयी भवः'** - तुम्हे युद्ध में विजय प्राप्त हो। आशीर्वाद देते समय उनकी आँखें भीग गई, और वे विचार करने लगे कि कहाँ युधिष्ठिर और कहाँ दुर्योधन? साक्षात् सत्य और असत्य दोनों की मूर्तियाँ ही देख लो ...!

मेरी इस नम्रता से गद्-गद् हो उठे भीष्म पितामह ने मुझसे कहा, "वत्स ! तुम्हारे प्रति मेरा वात्सल्य आज भी उतना ही है, और तुम्हारी भी हमारे प्रति भक्ति वैसी की वैसी ही है। किन्तु हम अत्यन्त लाचार हैं, उसने हमारी ऐसी सेवा की है, कि हम उसे छोड़ नहीं सकते। गलत प्रवाह में बहकर हम अपना सत्य खो चुके हैं। सत्य और न्याय तुम्हारे पक्ष में होने के बावजूद भी हम कायर बनकर असत्य और अन्याय के पक्ष में बैठे हैं। युधिष्ठिर ! दृढ़ विश्वास रखना, तुम्हारी विजय निश्चित है, क्योंकि धर्म और न्याय तुम्हारे साथ है।"

मुझे ऐसे आशीर्वाद क्यों मिले? आपको उस सज्झाय का पद याद है ?

विनय वडो संसारमां जे गुणमां अधिकाई रे,
गरवे गुण जाए गळी, प्राणी जुओ विचारी रे;
मान कर्युं जो रावणे, ते तो रामे मार्यो रे,
दुर्योधन गरवे करी, अंते सवि हार्यो रे.

दुश्मन के पक्ष वाले महारथी भी हमें आशीष दे, यह कैसे सम्भव हो? बस, विनय ही संसार में सबसे बड़ा है। आज भी किसी भी परिवार में बड़ों के प्रति यदि छोटों का ऐसा विनय हो तो वह परिवार चहुँमुखी समृद्ध बनता है।

ये सब हुई मेरे सकारात्मक चित्रण की बात, किन्तु अब मेरा दूसरा छोर भी मैं बता दूँ, जिसे कमजोर कड़ी कहा जा सकता है।

यथार्थ में धर्मराज के रूप में मेरी जगत में श्रेष्ठ पहचान होने के बाद भी अहंकार और जुआ मेरी

कमजोर कड़ियाँ थीं। शकुनि मामा को इस बात की पूरी जानकारी थी, इसीलिए मामा ने इन्द्रप्रस्थ में नई दिव्यसभा बनाकर हमें आमन्त्रण भेजा और वहाँ हर थोड़ी दूर पर जुआ खेलने वालों के टोले थे। उनमें से ही एक जुआरी ने मुझे निमन्त्रण दिया कि धर्मराज ! आइए हम जुआ खेलते हैं। पहले तो मैंने आनाकानी की, लेकिन पास में खड़े मामा शकुनि ने मेरे अहंकार को छेड़ते हुए कहा, "आप बाहुबल में अप्रतिम, लेकिन यदि बुद्धिबल में कमजोर हो, तो मत खेलना।" इन शब्दों ने मुझे हिला दिया और मैंने मन ही मन कहा कि बुद्धि-बल में भी हम किसी से कम नहीं, और जुआ शुरु हो गया। शकुनि के पास यान्त्रिक पासे थे, वे मुझे हराते रहे, और मैं लगातार हारता रहा। अन्त में द्रौपदी को भी दांव पर लगाया और हारा। सब जगह हाहाकार मच गया, बस उसी से महाभारत के युद्ध के बिगुल बजने की शुरुआत हुई।

पूर्व भवों में इस जीव ने धर्म करके सुन्दर गुणों का विकास भी किया है, तो अधर्म का आचरण करके दोष भी एकत्र किए हैं। तदनुरूप उत्तेजित निमित्त मिलने से इस जन्म में वे गुण या दोष बाहर प्रकट होते हैं। बड़े लोगों में भी कुछ कमजोरी अवश्य होती है, जो ऐसे समय में बाहर आती है।

मेरा जुए का प्रेम मेरे सभी दुःखों का मूल है, इस बाद का मुझे अतिशय आघात था। हमें वनवास की सजा दिलाकर भी शान्त न रहने वाला दुर्योधन हमें मारने के लिए लाक्षागृह दहन आदि के पैंतरे करता था, तब अत्यन्त क्रोधित द्रौपदी मुझे "कायर" जैसे शब्दों से सम्बोधित करके कटाक्ष करती थी। वनवास के अनेक कष्टों से सब परेशान थे। उबड़-खाबड़ रस्तों पर चलते जब पैरों में कोई पत्थर चुभता तो रक्त की धार बहने लगती, कभी भूख के कारण द्रौपदी आदि बेहोश होकर गिर जाते, उस समय भीम सबको उठाकर चलता था। एक रात तो हम सबको पथरीली धरती पर ऐसे ही सोते देखकर रात की चौकीदारी करते हुए भीम फफक-फफक कर रो पड़ा। पांच पाण्डवों की माता कुन्ती और पत्नी द्रौपदी के ये हालात !! फिर भी संघर्ष और संक्लेश की स्थिति में मैं वास्तव में युधिष्ठिर था।

जो युद्ध में स्थिर रहे, जरा भी टस से मस न हो, उसे युधिष्ठिर कहते हैं।

मेरे भाई, माता और पत्नी भी जब भी स्थिति असह्य हो जाती तो बेचैन हो उठते, द्रौपदी तो क्रोधावेश में अपने बाल नोचने लगती, छाती और सर पटकती और दुर्योधन को तत्काल खत्म करने की बात करती, उस समय मैं एक ही बात कहता कि "तेरह वर्ष के वनवास का स्वीकार करके ही मुझे हारी हुई द्रौपदी वापिस मिली है। वनवास पूर्ण होने पर हस्तिनापुर की राजगद्दी वापिस मिलेगी। यदि उसमें अन्याय हुआ तो मैं अकेला ही दुर्योधन को मार डालूँगा, किन्तु आज वचनभंग करके यह कार्य नहीं कर सकता। और न ही तुम्हें करने दूँगा। दुर्योधन अधम है, तो क्या हमें भी अधम बन जाना चाहिए? जैसे को तैसा की नीति मुझे स्वीकार नहीं है।

वैसे मेरी एक ही पहचान पर्याप्त है, मानो अनेक तूफानों के बीच अडिग हिमालय की भाँति खड़ा मैं, युधिष्ठिर।

आपको पता ही होगा कि जीवन के अन्त समय में हम पांचों पाण्डवों ने प्रवज्या ली और आसोज शुक्ला पूर्णिमा को 20 करोड़ मुनियों के साथ गिरिराज पर मोक्ष सिधारे।

सर्वस्वीकार की साधना

पूज्य पंन्यास श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

माता त्रिशला के हृदय की संवेदना इतनी गहरी थी,
उनका पुत्र-राग इतना था,
कि पुत्र-वियोग आयुष्य को उपक्रांत कर सकता था...
प्रभु खुद को त्रिशला-पुत्र के रूप में नहीं पा रहे है।
पुत्र-त्व तो शरीर की रचना के साथ बनता है।
शरीर न बना तो पुत्रत्व कैसा?
शरीर बनने से पहले, जो बनाया नहीं जाता,
शरीर मिटने के बाद जिसे बचाया नहीं जाता,
उस पुत्रत्व की अवस्था से प्रभु पराङ्मुख है।
प्रभु तो खुद को खुद में ही प्राप्त है।
खुद वो है, जिसे न बनाना पड़ता है, न बचाना पड़ता है।
वो सिर्फ होता है...

प्रभु खुद की न तो पुत्र रूप में आस्था रखते है।
न तो त्रिशलाराणी के जीव को माता के रूप में स्वीकृत करते है।
प्रभु उन्हें भी शुद्ध चैतन्य रूप में ही देखते है।
और उन्होंने खुद को माता के रूप में जाना/देखा तो
प्रभु उनकी उस अवस्था का भी स्वीकार करते है।
त्रिशलामाता ने प्रभु को पुत्र रूप में माना है
तो प्रभु उसका भी औचित्य करते है, निर्लेप रहकर....
किसी की मान्यता को अपना लेना वो औचित्य नहीं है।
पर, किसी की मान्यता को उसकी अवस्था समझ के उसमें राग-द्वेष न करना वो ही औचित्य है...।

उपयोग (ज्ञान) जिसको लेकर 'मै और मेरा' ये भाव खड़ा कर देता है
वो ही उसकी जीवन-अवस्था बन जाती है।
वो दरअसल में भ्रामक है,
पर ऐसी भ्रामक-अवस्था में से गुजरना
ये भी जीवो का क्रम है, क्रम स्वयंसंचालित है।
और भ्रम से मुक्त होना ये भी जीवों का क्रम है...।
क्रम में हस्तक्षेप करना वो भी एक प्रकार की हिंसा है।
ज्ञानी जानते है किसका क्या क्रम चल रहा है,
तदनुसार प्रतिक्रिया देते है वे,
इसीलिए अयोग्य को धर्म नहीं देते।

प्रभु को लेकर त्रिशलाराणी के मन में मेरापन का भाव जो उठा
वो इतना गहन था की जीवनअवस्था में रुपांत-रित हो गया था।
'मेरा न रहे तो में ही ना रहुं' ममत्व के ये भाव आयुष्य को झटका दे सकते थे।
तो प्रभुने उस क्रम में हस्तक्षेप करना नहि चाहा,
प्रभु से अभिग्रह हो गया की
जब तक त्रिशलाराणी माता की अवस्था में है,
तब तक मैं गृहत्याग नही करुंगा...।

प्रभु की वो दशा है की वैराग्य को चारित्र में परिवर्तित होने की
घटना को विलंबित करने के लिए अभिग्रह लेना पड़ा।
हम पूरे उलटे है, हमें तो चारित्र में वैराग्य का प्रवेश कराने के लिए
अभिग्रह की जरुर पड़ती है...।

अभिग्रह से प्रभु घटना को नहीं बदल रहे थे,
घटना इस ही प्रकार से होनी थी जिसमें अभिग्रह लेना भी शामिल था,
उसे प्रभु जान रहे थे, साक्षी थे,
ये नियतिवाद नहीं अपितु सर्वस्वीकार की साधना थी।
जो अस्तित्व के आस्वाद से आविर्भूत हुई थी।

प्रभु!
आप गर्भ में रहे भी आत्मा में रह रहे थे,
ओर सर्वस्वीकार की साधना सहज आराधन कर रहे थे,
हम दूसरे गर्भ में जाने की उम्र तक शरीर में हि आसक्त रह जाते है।
ओर छोटी मोटी घटनाओ की प्रतिक्रिया करके संक्लिष्ठ बन जाते है।

प्रभु!
आपका जीवन हमारे लिए प्रेरणा स्रोत बनता रहो!
हम अंतर्मुखी बने, सर्वस्वीकार कर!!!

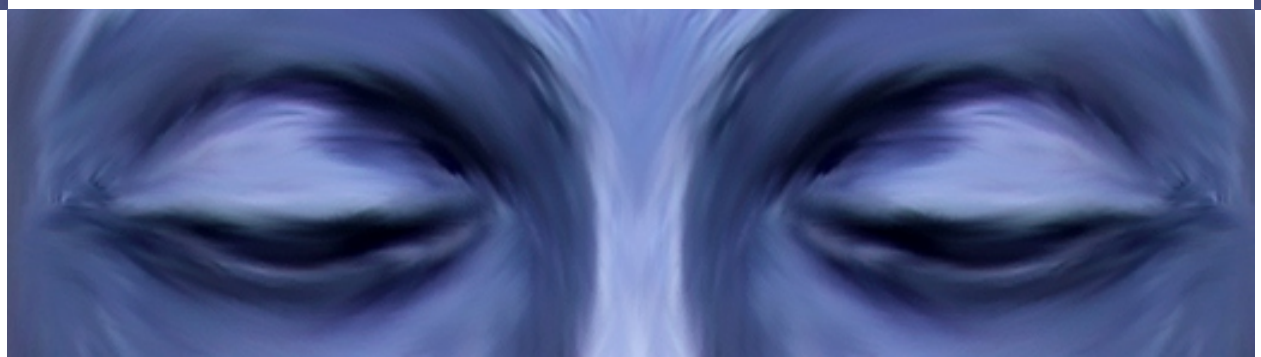

Everything is Online, We are Offline - 2.0

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

वर्षो पहले आग्रा में एक स्थान पे रुके थे। मंदिर जाने के लिए सुबह-सुबह बाहर निकला तो बाहर बैठा चौकीदार बड़ा उदास दिख रहा था। मुझे दया आ गई, सहजता से पुछा तो जवाब मिला, रोती सूरत में 'मेरा सब कुछ लूँट गया।' रातभर जगने के कारण लाल और दुःख के कारण भीगी आँखो से उसने बताया, 'एक महिला से बातें होती रहती थी। चेटिंग भी चलती रहती थी, उसने ना बोल दी, रिश्ता बनते-बनते बिगड़ गया। वो भी शादीशुदा थी, मैं भी शादीशुदा हूँ।'

चौकीदार की बातें सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, फिर एक प्रश्न और पुछ लिया, 'क्या आपने कभी उस महिला से मुलाकात की थी?'

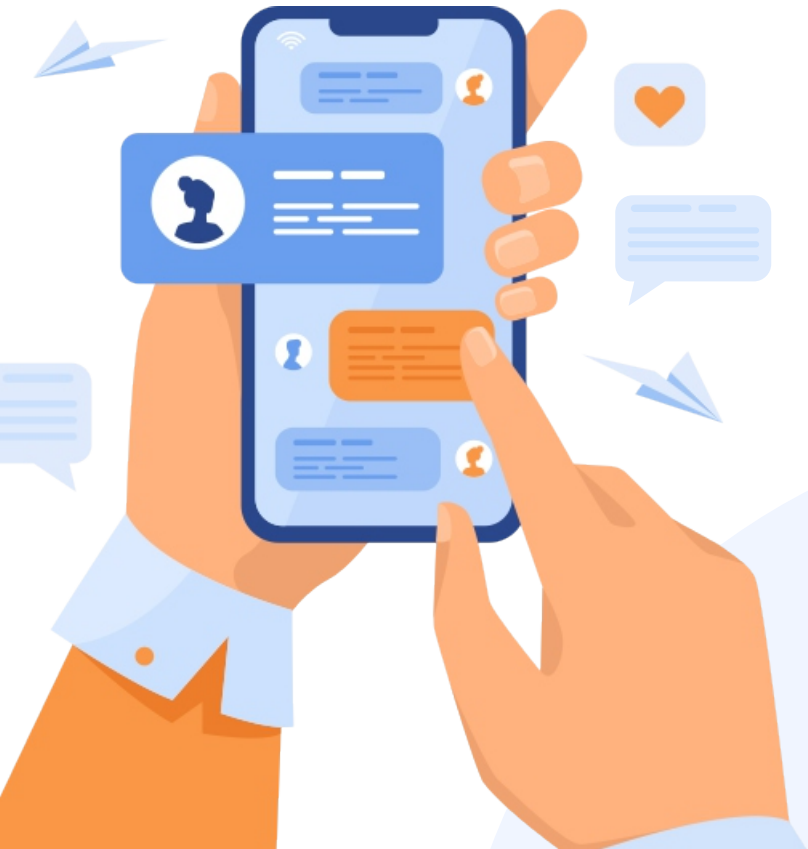

'ना जी! मैंने तो उन्हें देखा तक नहीं था।' यह सुनकर मेरा वैराग्य बहुत ही दृढ होने लगा।

वहाँ पर मैंने बातचीत का पूर्णविराम रख दिया, मगर यह तो सिर्फ एक झांकी है। मोबाइल से फैले विनाश की पूरी कथा कहनी अभी बाकी है।

आए दिन ऐसे समाचार कान पे आते रहते है कि, किसी की शादी मोबाईल के कारण टूट गई और कोई शादी के पहले ही टूट गया। किसी का परिवार बिखर गया तो किसी ने आत्महत्या कर ली।

जिस को कभी भी देखा ही नहीं, ना कभी उसका किसी भी तरह का परिचय किया हो, ना कभी उसके बारे में सुना हो, उससे घण्टो तक बातें करते रहना। उनके साथ हवाई रिश्ता बना लेना और ख्वाबों की दुनिया में शेर करना मगर जब सपनों के आसमान से टूटकर वास्तविकता की धरती पर गिरना होता है, तब हमारा अस्तित्व चूर-चूर होता है और हम दुनिया से दुर-दुर होते है।

गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड की जानेवाली अनेक एप (फेसबुक-इन्स्टाग्राम इत्यादि) आज हमें एक वर्चुअल वर्ल्ड में ले जाती है, साथ-साथ इस वास्तविक दुनिया से अलग कर देती है।

मोबाइल बड़ा काम का हो सकता है मगर हमारा काम का बड़ा समय भी वो ही खा जाता है, यदि सचेत ना रहे तो!

आज-कल बच्चों को, स्कुल टीचर्स, टास्क देते है और टास्क भी अजीबो-गरीब। मैंने जब सुना तो मैं भी हैरान हो गया क्योंकि टास्क में, बच्चों को Best Video बनाने का लक्ष्य दिया जा रहा था।

एक विडियो बनाने के लिए बच्चों को यु-ट्युब जैसी अनेक एप की सफर करनी पड़ती है और आप तो जानते ही होंगे कि, इन्टरनेट की दुनिया में प्रवेश करते ही बच्चों के कोमल मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले बहुत सारे दृश्य, जो उसे देखने लायक नहीं हैं वो देखने पड़ते है।

बच्चों को 'हैरी पोटर' की कहानी इन्टरनेट से सर्च करने को कहा जा रहा है, मगर वो माँ-बाप कहाँ जानते है कि 'हैरी पोटर' की कहानी को ढूंढने का टास्क देने के पीछे आखिरी मक्सद क्या है?

(इतना ही नहीं, 'हैरी पोटर' की कहानी में भी कितने सारे गुप्त संदेश डाले गये है, वह भी कहाँ पता है?)

आज से 13 साल पहले मेरे गुरुदेवश्री (जैनाचार्य श्री रत्नसुंदर सूरिजी म.सा.) के अथक प्रयास से भारतराष्ट्र में बच्चों को पढाने हेतु लाई जा रही यौनशिक्षा रुक गई थी, मगर मुझे अब लग रहा है कि, वे लोग ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम से घर पे ही यौनशिक्षा पढ़ाने में सफल हो जाये तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

बच्चों को मोटिवेट किया जा रहा है कि, सात साल के (सिद्धांत नामक) बच्चे ने एप बना ली और पाँच साल की बच्ची यु-ट्युब के प्लेटफोर्म पर विडियो अपलोड करके करोडो रूपये की कमाई कर चुकी है, मगर... बच्चों को इस बात का ज्ञान कौन देगा कि, मोबाइल से ज्ञान लेते-लेते कहीं आँखे गुम ना हो जाये, पवित्रता अदृश्य ना हो जाये। शिक्षा, स्वास्थ्य और संस्कार में, संस्कारों को ही प्राथमिकता देनी जरूरी है। स्टीव जोब्स ने भी 18 साल तक अपने बच्चों को मोबाईल से दूर रखा था।

अभी एक बहन ने अपना अनुभव बताया था कि, 'हमारे घर के सारे बच्चों को इस ऑनलाईन के चक्कर में चश्में आ गये और वो भी सिर्फ छः महिनों में ही...' शिक्षा आवकार्य है मगर स्वास्थ्य एवं संस्कारों के बलिदान पर? हरगिज़ नहीं। बच्चों को सिखाने के लिए अब नए-नए क्लासिस शुरु हो चुके है, जो बच्चों को वेबसाईट, एप और नई-नई गेम्स डेवलप करने के लिए कोडिंग, डी-कोडिंग सीखाते है। बच्चों को किसी का डाटा हैक कैसे करना, वो भी सिखाया जाता है, अहो आश्चर्यम्, चाईना में तो ऐसे क्लास धडल्ले से खुल चुके है यानी चोरी सीखाने की कला...।

'99₹ भरो और जीतो करोडो रूपये' के विज्ञापनों की भरमार भी सोशल मीडिया पर जगह-जगह दिखने लगी है, यानी जुआँ भी अब खुलेआम

खेला जाने लगा है। शिकार-शराब-परस्त्रीगमन-वेश्यागमन-मांसाहार-चोरी-जुआँ इन सातों व्यसनो को जीवन में लाने के लिए अब सिर्फ एक व्यसन की जरूरत रह जाती है और उस आँठवें व्यसन का नाम है, मोबाइल का व्यसन। (Addiction of mobile)

आप को भरोसा ना बैठता हो तो, किसी से भी पुछ लो, पिछले छः महिनों में जितनी बिरयानी, झॉमेटो और स्वीगी ने बेची होगी, उतनी पहले कभी भी नहीं बेची है, ऐसा क्यों? मांसाहार से भरी चिकन बिरयानी बार-बार दिखाकर आपके दिमाग में कुछ ना कुछ जगह अवश्य बनाकर रहता है। सिर्फ - 79₹ या सिर्फ - 149₹ में यदि हॉम डीलीवरी हो रही है, तो मम्मी-पापा की अनुपस्थिति में मोबाईल की लत लगा चुका छोटा बेटा घर पे मंगवाकर खाने से हिचकिचायेगा नहीं, क्योंकि, कोई देखनेवाला ही नहीं है कि, हमारे घर पे बच्चा क्या कर रहा।

जिस घर को सुरक्षित जगह माना जा रहा था वह घर भी अब सुरक्षित नहीं रह पाया है।

जो चीजें बाजार में खरीदने में शर्म महसूस होती थी, ऐसी चीजें अब हॉम डीलीवरी से घर पे मंगवाने में, अच्छे खानदान-कुलीन परिवारों की सुशील सन्नारीयों को भी अब सुविधाजनक हो गई। Online से संस्कारों की स्मशानयात्रा निकलने लगी। सभी लोग अपनी-अपनी मस्ती में मस्त है। भगवान, मौन है और गुरुभगवंत, लोक कल्याण के कार्यो में व्यस्त है, जन, चिंतित एवं त्रस्त है... क्या इससे बड़े नुकसान की संभावनाएँ Online मोड में है?

जानते है, अगले एपिसोड में... (क्रमशः)

ADDICTION OF MOBILE

एक स्वप्न देखते है...

"प्रियम्"

Relation

यह मेरा बेटा है, इस मुद्दे पर हम सब कुछ गौण करने को तैयार है। वो नवकार गिनता है, इस मुद्दे पर हम कुछ भी गौण करने को तैयार नहीं है। इसका अर्थ यह है कि बेटे के साथ हमारा पूरा रिलेशन है, पर नवकार के साथ हमारा बिलकुल रिलेशन नहीं है। तो हम जैन कैसे? बेटे के लाख दोष हम माफ करने को तैयार है, जैन के एक भी दोष मिल जाये तो हम तूट पड़ने को तैयार हो जाते है। तो इसका अर्थ यही है कि, हमें हकीकत में दोषों के साथ कोई लेना-देना है ही नहीं। हमें सांसारिक भावना पूरी है, धार्मिक भावना बिल-कुल नहीं है - सच्चा हार्द यही है।

अयोध्यावासीओं जंगल में दौड़ें चले गये, राम को वापस लाने के लिए मरणांत प्रयत्न किये। राम नहीं माने तो कैकेयी पर आक्रोश करने लगे।

राम ने कहाँ, "आपको भरत कैसा लगता है?"

"श्रेष्ठ, अत्यंत सज्जन, सबसे निस्पृह, पूरी अयोध्या में वो ही तो सबसे ज्यादा रोया है।"

राम ने कहाँ, "जिसका फल इतना अच्छा हो, वह लता (वेल) कैसे खराब हो सकती है?"

आज हमें एक प्रश्न लेकर जाना है। जिनके पास नवकार है, यह खराब कैसे हो सकता है? जिसके घर संयमी भगवंतो के पगलिए होते है, वह बुरा कैसे हो सकता है? जिसके घर में भगवान विराज-मान हैं, वह खराब कैसे हो सकता है? जो महा-वीरस्वामी को सिर झुकाता हो वह खराब कैसे हो सकता है? यदि भरत के संबंध से कैकेयी महान हो सकती है तो देव-गुरु-धर्म के संबंध से जैन महान क्यों नहीं हो सकता?

बेटा बिलकुल नहीं मानता हो, हमारी परवाह ना करता हो, अपमान करता हो, नीचा दिखाता हो, बुढ़ापे में भी ख्याल ना रखता हो, तो भी हम किसी के आगे उसकी निंदा नहीं करते है। उसके सामने होने का हमें विचार तक नहीं आता है। भगवान को नमन करने वाले, भगवान को मानने वाले, भगवान के उपदेश के मार्ग पर चलने वाले और भगवान के नाम पर खुद की बचत के पैसे से सुकृत करने वाले हमारे (?) कोई कसूरवार (?) लगे और हम उनकी भरपेट निंदा कर सकते है। तो इसका सीधा मतलब उतना ही है कि, हम भगवान में मानते ही नहीं है।

भगवान को हमारा सच्चा प्रणाम-वंदन तब कहलायेगा कि हर एक जैनों को हम भाव से हाथ जोड़ सकेंगे। हमने सच्चा नवकार गिना है ऐसा तभी ही कहलायेगा, जब सपने में भी हमसे नवकार गिनने वालों की अवहेलना नहीं होगी।

पेट का पोस्टमोर्टम

हमारी अदम्य इच्छा 'किसी' का मैल दूर करने की होती है। हमारी वास्तविक आवश्यकता तो हमारा पेट साफ करने की होती है। बातें हम दूसरों के दोषों-भूलो की करते है, पर वो ही दोष-भूल हमारे बेटे की हो तो कोई बात नहीं है। उसका अर्थ यही है कि हमारा पेट साफ नहीं है।

व्यक्ति द्वेष - यह व्यक्ति के धर्म के गुणों के, साधना के, और सत्कार्यों के द्वेष में परिणमता है। तब अनंतकाल में भी फिर से यह धर्म-गुण-साधना और सत्कार्य मिलने दुर्लभ बन जाते है।

हम मानते है कि हमें धर्म आदि का द्वेष नहीं है, हमें व्यक्ति का भी द्वेष नहीं है, हमें केवल उसके दोषों के प्रति द्वेष है। पर यह हमारा भ्रम होता है। क्योंकि यह सब को अलग कर पाना संभव ही नहीं है। छाती पर हाथ रखकर हम अपने आपसे पूछेंगे कि हमें जिसका द्वेष है, उसका धर्म हमें अच्छा लगता है? चार लोगों के बीच हम उसके धर्म की अनुमोदना कर पाते है? सच्चे हृदय से उसके पर प्रमोदभाव जगता है? ऐसा कुछ भी नहीं होता है। हमें तो उनकी निंदा ही सूजती है। तो फिर हमें व्यक्तिद्वेष नहीं है, ऐसा कैसे कह सकते है?

हमारा आग्रह यह है कि 'जैन' में दोष नहीं होने चाहिए। (मैं अपवाद, मुझमें होगा तो चलेगा) यानी की जैन - यह केवलज्ञानी होना चाहिए, नहीं तो में तो उनका दोष देखूँगा और उनको बदनाम करुँगा। जरूरत पड़ी तो लड़ूँगा भी। वो उसके घर पर प्रतिक्रमण करेगा तो मैं पुलिस बुलाऊँगा। वो पूजन करेगा तो मैं उसमें से भी मैं कुछ ढूंढ़ लूंगा। वो ट्रस्टी होगा तो मैं संघ के कार्यों में रोड़े डालूंगा। वो धर्मी होगा तो मैं उसके धर्मकार्यो की निंदा करुँगा। उसमें दोष होगा तो, यह तो कैसे चलेगा?

हम हमारे इस सत्याग्रह में दो बातें भूल जाते है।

1) हमारे में भी बेशुमार दोष है।

2) भगवान ने जब संघ की स्थापना करी तब उसमें एक भी केवलज्ञानी नहीं था। संघ की एक भी व्यक्ति ऐसी नहीं थी कि जिसमें एक भी दोष ना हो। फिर भी भगवान उस संघ को 'नमो तित्थस्स' कहकर नमस्कार करते है।

क्या हम भगवान से भी अधिक ऊँचे है? या फिर ज्यादा समझदार है? यहाँ से शुरुआत कीजिये। 'जैन' मात्र को हाथ जोड़ो, वंदन करो। 'शुरुआत' यहाँ से ही होती है।

संघपूजा

हम संघपूजन का लाभ लेते रहते है। पूजन के लिए आवश्यक क्या है? पैसा ही? हमारी व्याख्या यही है, 'सब कुछ पैसे से ही होता है।' ज्ञानी कहते है कि संघपूजन के लिए आवश्यक एक ही वस्तु है। संघ के प्रति पूज्यबुद्धि। पूज्य-बुद्धि यह नैश्चयिक पूजन होता है। यह हो, फिर यथाशक्ति व्यवहार तो होने ही वाला है। जिसकी पहेरामणी (भेंट) के साथ संघभोजन (स्वामी-वात्सल्य) की शक्ति होगी, वो व्यक्ति वही करेगा। जिसकी मात्र पतासे की प्रभावना की शक्ति है, वो वही करेगा। जिनकी संघ के सिर्फ पाँच सभ्यो को प्रभावना देने की शक्ति है वो वही करेगा। जिसकी इतनी भी शक्ति नहीं है, वो भी संघपूजन करे यह शक्य है, क्योंकि वास्तविक पूजन तो पूज्यबुद्धि ही है। **हमारे द्वारा संघ स्वामीवात्सल्य हो जाये, पर पूज्यबुद्धि ना हो, तो संघपूजा अधूरी रह जाती है।**

संघ, यह महावीर का परंपरा देह है। संघ को देखकर आँखों में आनंद के आँसु आ जाये यह महावीर का अभिषेक है। संघ के एक-एक सभ्य को देखते ही झुक जायेंगे, यह महावीर का चैत्यवंदन है। संघ की एक भी व्यक्ति तकलीफ में हो, यह हमारे लिए असह्य बन जाए, यह महावीर के साथ अपनेपन की भावना है। संघ का एक भी सभ्य आर्थिकता से उपर आ जाये, और हमें आनंद-आनंद हो जाये, यह महावीर की स्तुति है। 'संघ' नाम सुनते ही रोमांच हो जाए, यह महावीर की पूजा है।

संघ की खातिर आधी रात को भी हम खडे रहने तैयार होते है, यह महावीर की आंगी है। संघ खातिर जीवनसमर्पण करने की भावना साकार बन जाये, यह महावीर की शाश्वती महापूजा है।

एक स्वप्न देखते है,
देरासर के बाहर पार्क की हुई गाड़ीयो को हम साफ कर रहे है।

एक स्वप्न देखते है,
प्रभु के दर्शनार्थी के जूते-चप्पल को हम पोलिश कर रहे है।

एक स्वप्न देखते है,
हम देरासर के दरवाजे के बाहर रोड पर खड़े है और छोटा-बड़ा जो कोई भी आये उनको हाथ जोड़कर सर झुकाकर प्रणाम कर रहे है।

एक स्वप्न देखते है,
जैसे हम अपने लाड़ले बेटे को खाना खिलाते हैं, वैसे प्यार-दुलार से संघ के किसी प्रसंग में हम संघ के सभ्यों को परोस रहे है...

आज इतना सपना भी यदि देख सकते है तो यह बड़ी सिद्धि है। आज इतना स्वप्न भी नहीं देख सकते है तो आने वाला कल शून्य है।

आज्ञा चक्र ध्यान

पूज्य मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा.

(क्रमांक 1 से 6 तक मूलाधार चक्र ध्यान के मुताबिक ध्यान करने के पश्चात)

7. फिर विचार कीजिए कि दूर क्षितिज से गहरे जामुनी रंग का बिन्दु देखें, वह धीरे-धीरे निकट आते हुए पीले रंग का हो रहा है। एकदम करीब आने पर वह एक सुन्दर कमल दिखाई देता है, उसकी दो पंखुड़ियाँ हैं, उन्हें देखिए, वह कमल धीरे-धीरे खिल रहा है, प्रकाशमान हो रहा है। कमल की कर्णिका हरे रंग की देखें। और उसके पराग को प्रथम पीले रंग में देखें फिर उसकी हल्के नीले रंग में परिवर्तित होते हुए देखिए।

8. उस पराग के मध्य में बड़े अक्षर में पंचरंगी ॐ बनाइए, स्थिर कीजिए और प्रतिष्ठा कीजिए।

9. तत्पश्चात् आकाश से पीले वर्ण के पुंज को अपनी ओर आते हुए देखें। समीप आने पर उसके दो बिन्दु देखें, और समीप आने पर आप एक बिन्दु में श्री अरिहन्त परमात्मा, और दूसरे में शासन देवी देख रहे हैं। और निकट आने पर आप वहाँ श्री शान्तिनाथस्वामी और शासन देवी "श्री निर्वाणी देवी" यक्षिणी को देखते हैं। फिर उस पीतपद्म कर्णिका में "ॐ" अक्षर के मध्य भाग के दाहिनी ओर परमात्मा श्री शान्तिनाथ भगवान और बाईं ओर शासन देवी श्री निर्वाणीदेवी यक्षिणी को विराजित करें, स्थिर करें और प्रतिष्ठा करें।

10. अब आकाश से आपको लाल पुंज का बिन्दु आता हुआ दिख रहा है, वह करीब आने पर

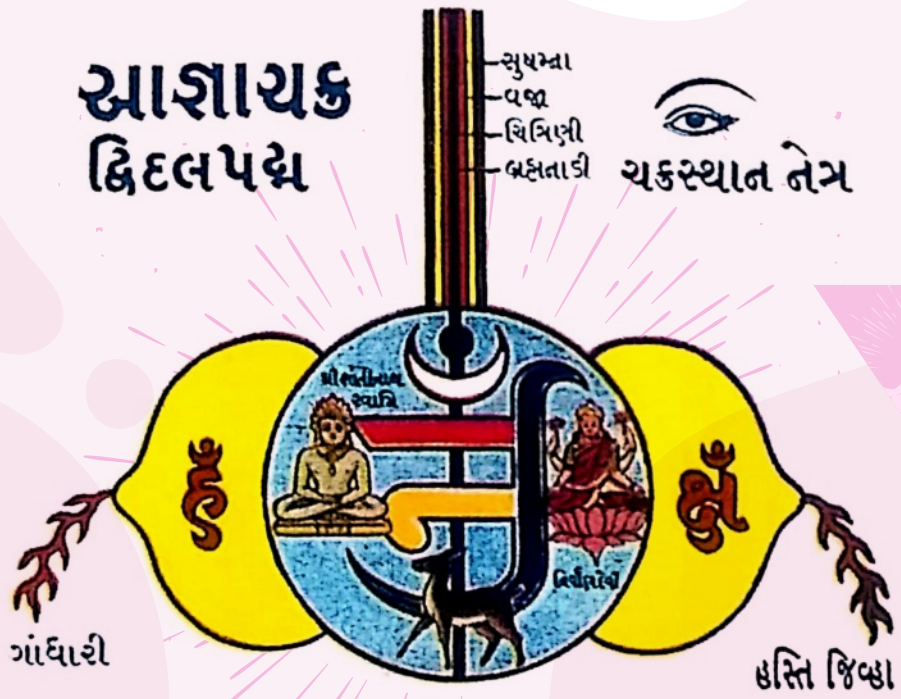

मातृका वर्णिका दिख रही है – "हँ" और "क्षँ"। इन दो अक्षरों में से "हँ" को पद्म की दाहिनी पंखुड़ी पर और "क्षँ" को बाईं पंखुड़ी पर रखें, स्थिर करें और प्रतिष्ठा करें।

11. फिर उस कमल के पीले पंख से दो रेशे उतारें,

(i) पहले दाहिने रेशे से "गाँधारी" और
(ii) दूसरे बाएँ रेशे "हस्तिजिह्वा"

12. परम कृपालु परमात्मा का लांछन हरिण है। यह अत्यन्त सौम्य, शान्त, परम तेजस्वी, निर्विकारी, अत्यन्त ओजस्वी, मनमोहक, अत्यन्त प्रभावशाली, महापुण्यवान, परम सौभाग्यशाली और महा मंगलकारी है। ऐसा हरिण आता हुआ देखें, फिर इसे पीतपद्म कर्णिका में **"ॐ"** में सबसे नीचे प्रभु के चरणों में विराजित करें, स्थिर करें तत्पश्चात् प्रतिष्ठा करें।

13. अब कमल को ब्रह्मरन्ध्र के पास ले जाएँ, उस कमल को आते देखकर सुषुम्ना नाड़ी खोलें, फिर उस कमल को अन्दर ले जाकर सम्पूर्ण नाड़ी में फिराएँ और ब्रह्मरन्ध्र के पास लाएँ। फिर वज्र नाड़ी खोलें, और उस कमल को अन्दर ले जाकर सम्पूर्ण नाड़ी में फिराएँ और ब्रह्मरन्ध्र के पास लाएँ, फिर चित्रिणी नाड़ी खोलें, और उस कमल को अन्दर ले जाकर सम्पूर्ण नाड़ी में फिराएँ और ब्रह्मरन्ध्र के पास लाएँ। फिर ब्रह्मनाड़ी नाड़ी खोलें, और उस कमल को अन्दर ले जाकर सम्पूर्ण नाड़ी में फिराएँ और मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपुर चक्र, अनाहत चक्र और विशुद्धि चक्र को स्पर्श करते हुए आज्ञा चक्र में फिराएँ, स्थिर करें और प्रतिष्ठा करें।

14. अब इस पीले द्विदल पद्म को शान्तचित्त से निहारें।

15. इस चक्र का स्थान दोनों भ्रमरों के बीच है और गहरे जामुनी रंग के त्रिकोण जैसा इसका आकार है।

16. यह चक्र अत्यन्त प्रभावशाली है और दिव्य-शक्ति का केन्द्र चक्र है।

17. इस चक्र के ध्यान और आराधना के प्रभाव से वचनसिद्ध योगी बनता है।

18. ऊपर से यह चक्र चन्दन के वृक्ष से प्रभावित है, इस चक्र में पहुँचने और कमल को स्थिर करने में "ता" इसकी चाबी रूपी मन्त्र है। 'श्री शाकिनी देवी' और शासन देवी 'श्री निर्वाणी देवी' यक्षिणी से अधिष्ठित और हरिण लाँछन युक्त 'श्री शान्तिनाथ' भगवान इस चक्र के सम्राट हैं। हम प्रभु के लिए एक थाल भरकर जूही के फूल लेकर खड़े हैं, और प्रभु को चढ़ा रहे हैं। यह चक्र ऐसे महा प्रभावशाली, परम प्रतापी, परम सौम्य और सर्वक्षुद्रोपद्रशामक अत्यन्त पवित्र प्रभु से एवं प्रकाश तेज तत्त्व से प्रभावित है।

19. इस चक्र की आराधना से शुभ अन्तःस्फुरणा, अंतर्मन और छोटा मस्तिष्क जागृत होता है।

20. जैसे प्रकाश को जिस ओर ढालें उधर ढल जाता है और सभी वस्तुओं का बोध कराता है, उसी प्रकार सम्यक् रूप से प्रभावित इस चक्र के माध्यम से साधक को खुद को और अन्य को सच्ची दिशा की ओर ले जाने का सामर्थ्य प्रकट होता है। साथ की किसी भी चीज को सही तरीके

से समझने की क्षमता उत्पन्न होती है।

21. प्रकाश में जीव जागृत अवस्था में रहे तो बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है, साथ ही कार्य करते हुए पूरी जागृति रहती है, इससे अन्तःस्फुरणा, भावना और कल्पनाशक्ति पूर्णतया खिलती है। और यदि सुषुप्त रहे, तो उसका विकास रुक जाता है, और स्वास्थ्य भी बिगड़ता है।

22. जैसे प्रकाश की उपस्थिति में जीव पाप कार्य करते रुकता है, और गुप्त या खराब कार्य करने से पूर्व विचार करता है, उसी प्रकार सुप्रभावित हो चुके इस चक्र के सत्प्रभाव से जीव पाप करने से डरता है।

23. जिस प्रकार प्रकाश सभी को बिना किसी भेदभाव के प्रकाशित करता है, उसी प्रकार आज्ञाचक्र से प्रभावित साधक अपने विचार बोले बिना ही (टेलीपेथी या ट्यूनिंग से) या कहकर बिना भेदभाव के सामने वाले तक पहुँचाता है।

24. आज्ञा का अर्थ है आदेश, इस चक्र से प्रभावित साधक कोई भी कार्य स्वयं करे या न करे, किन्तु अन्य से कार्य करवाने में समर्थ होता है।

25. यदि यह चक्र सम्यक् तरीके से प्रभावी हो तो जागृतावस्था प्राप्त होती है, मस्तक जागृत रहने के कारण सुबह और शुद्ध अन्तःस्फुरणा, ज्ञान, बुद्धि, कल्पनाशक्ति, आन्तरिक शक्ति, इच्छाशक्ति आदि प्राप्त होती है। रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है, शारीरिक विकास सुव्यवस्थित रूप से होता है, मन-वचन-काया बलवान बनती है, कोई भी दैवीय तत्त्व परेशान नहीं कर सकते। स्वयं की मानसिक स्थिति सकारात्मक होने के कारण कल्याण मित्र बहुत होते हैं, और अनुयायी वर्ग भी बड़ा होने के कारण सब लोग उसकी बात का पालन करते हैं।

26. यदि यह चक्र नियन्त्रित न हो तो व्यक्ति आलसी, निद्राप्रिय, चोट या अन्य रोग के कारण बेहोश होने वाला, अपनी बात अन्य को बताने में असमर्थ, टेलीपेथी या ट्यूनिंग में अशक्त, अयोग्य बात कहने में समर्थ, रोगी, बेडौल शरीर वाला, मलिन दैवीय तत्त्वों (नजर आदि) से ग्रस्त, प्रशस्त कल्पनाशक्ति से हीन, या खराब कल्पना में रत, कोई सलाह मांगे या दे तो उससे उलझने की वृत्ति वाला, और इन सब कारणों से शत्रुओं से घिरा और गलत संगत में रहता है इस कारण संसार में भटकता है। इसलिए इस चक्र को काबू में रखना जरूरी है।

27. इस चक्र को नियन्त्रित करने के लिए 'संवर' की भावना सतत करते रहना चाहिए, जिससे सागर जैसा अपरिमित संसार परिमित बने, मन प्रफुल्लित बने, अनन्त सुख का भोग मिले उच्चतम कक्षा की समाधि मिले।

28. फिर इस चक्र को निहारते हुए इस चक्र के मूल मन्त्र "ॐ ह्रीं नमः" का जाप करते हुए चेतना को सभी नाड़ियों से बाहर निकालें। फिर ब्रह्म नाड़ी, चित्रिणी नाड़ी, वज्र नाड़ी और सुषुम्ना नाड़ी को बन्द करते हुए अशोक वृक्ष के नीचे आकर शान्त चित्त होकर सरोवर का अवलोकन करें। फिर "ॐ शान्ति" तीन बार बोलकर दोनों हाथ मसलकर आँखों पर लगाएँ और पूरे शरीर पर हाथ फेरते हुए धीरे-धीरे आँखें खोलें।

Power of Unity

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

अनन्तज्ञानी तीर्थंकर श्री भगवान महावीर के द्वारा आज से 2576 वर्ष पूर्व जिनशासन की स्थापना की गई थी।

समय के प्रवाह में बहते बहते इतने वर्षों के पश्चात् अपने शुभ कर्मों के फल स्वरूप ही अत्यंत समृद्ध एवं उन्नत ऐसे जिनशासन की हमें प्राप्ति हुई है।

हमें यह जिनशासन अस्थिर अथवा चलायमान नहीं मिला है... और ना ही खिन्न, विदग्ध होकर शय्या पर मरणावस्था में करवटें लेता हुआ प्राप्त हुआ है।

किन्तु...

परम परमात्मा द्वारा स्थापित इस शासन में नकारात्मक (Negative) विषयों को खोजने वाले कई जीवों की दृष्टि इस प्रकार संकुचित (Narrow) हो गई है कि उन्हें शासन में केवल और केवल दोष ही दिखाई देते हैं।

जैसे कि; हम लोगों में एकता नहीं है... हम संवत्सरी प्रतिक्रमण भी अलग-अलग करते हैं... क्रियाविधि में भी कितने भेदभाव हैं... शास्त्रवचनों के अर्थघटना में एकरूपता नहीं है... परम्परा/सामाचारी में अमर्याद विभिन्नता है... वग़ैरह... वग़ैरह...

ठीक है ! चलो, मान भी लेते हैं कि ये सभी बातें सच हैं... तो क्या ?

क्या हम सदा जिनशासन की निन्दा ही करते रहेंगे? वर्तमान स्थिति में जो भी शासन में गलत हो रहा है उसकी टीका-टिप्पणी करने से क्या शासन का अभ्युदय हो जाएगा ?

जिस जनसामान्य को ऐसे अद्भुत शासन की प्राप्ति नहीं हुई है यदि वह भलीभाँति समझता है कि घर की समस्याओं का रुदन अन्यजनों के सामने यदि जाहिर में करेंगे तो उसका कुछ समाधान नहीं प्राप्त होगा अपितु ऐसा करने से स्वयं के घर-गृहस्थी की इज्जत ही सबके सामने जाती है।

वैसे ही शासन को जो अपने घर-परिवार से अधिक प्रेम करते हैं, ऐसे व्यक्ति किस प्रकार शासन की नकारात्मक बातों की चर्चा जाहिर में कर सकते हैं ?

दूसरी बात :

आपको शासन में दूषण दिखाई देते हैं... तो अन्य धर्मों में ऐसे कौनसे भूषण दिखाई देते हैं ? अन्य धर्मों की राई जितनी विशेषता भी आपको मेरु के भाँति विशाल लगती है ।

विश्व में कौनसे धर्म में वाद-विवाद-विसंवाद नहीं है ?

(यह बात धर्म सिवाय संस्था, समाज और घर-परिवार को भी लागू होती है... सर्वत्र यह समस्या सामान्य है ।)

जो कुछ आपके नजरों में आता है उसे आप जैनधर्म की Negativities के रूप में देखते हो और अभी तक जो कभी भी आपकी नजरों में नहीं आया है उस धर्म में आपको जिनशासन से भी अधिक विशेष गुणवत्ता के दर्शन होते हैं । इससे तो आपके सम्यक्त्व पर ही मुझे शंका होती है ।

- मुस्लिमों में शिया, सुन्नी, वहोरा, देवबंद वग़ैरह अनेक प्रकार की शाखाएँ हैं ।
- वैदिक धर्म में भी स्वामी नारायण, वैष्णव, शैव, प्रणामी, नाथ इत्यादि अनेक सम्प्रदाय हैं ।
- ख्रिस्ती धर्म में भी कैथेलिक, प्रोटेस्टैंट, ऑर्थो-डॉक्स वग़ैहर अनेक पन्थ है ।

आपके दृष्टि में लाने के लिए यह तो केवल कुछ उदाहरण बताएँ... यदि इसी प्रकार की सूक्ष्मता से निरीक्षण करेंगे तो स्पष्ट रूप से ध्यान में आएगा कि सर्वत्र विभिन्न पन्थों, समुदायों, सम्प्रदायों में उनकी अपनी विचारधारा, तर्क, सिद्धान्त, आचार, तत्त्वों में मतभिन्नता होने के कारण शाखा-विशाखाएँ तो बनी हैं ही... अर्थात् ऐसा केवल जैन धर्म में ही नहीं है ।

और हाँ... सामाजिक व्यवस्था में भी अनेक प्रकार हैं...,

जैसे कि; ओसवाल, पोरवाल, श्री-माल, पल्लीवाल, खंडेलवाल, कच्छी, मारवाडी, दसा, विसा, हालारी, घोघारी वग़ैरह...

तो ये पन्थ... सम्प्रदाय... परम्परा... समाज एक होने चाहिए ऐसा आप मानते हैं ?

और यदि एक हो भी जाए तो सब कुछ सुव्य-वस्थित रूप से अपने उद्देश तक पहुँच जाएँ ऐसा भी आप चाहते हैं ?

किसी कार्यक्रम के आयोजन में सभी को एक मंच पर लाने से एकता हो जाएगी, आपकी विचार-धारा ऐसी है ?

यदि इन सभी बातों में आप अनुरोध रखते हैं... तो ध्यान से सुनें...! आप भ्रम में जी रहे हैं...!

क्युँकि आपके दृष्टि... मान्यताएँ... विचारधारा ही गलत है।

- क्या कोई भी कभी भी अपने मतानुग्रह को छोड़कर... उस मतानुग्रह को सर्वसमक्ष भूल के रूप में स्वीकार करेगा...? और तत्पश्चात् सभी एकत्र होकर एकमत से किसी सिद्धान्त की स्थापना करेंगे..., ऐसा होना असम्भव है।
- मूर्तिपूजक मुखपर मुहपत्ति बाँधेंगे... स्थानक-वासी देहरासर जाएँगे... दिगम्बर वस्त्रों को धारण करेंगे... ऐसी कल्पनाएँ शेखचिल्ली के सपनों की तरह ही तो है।
- फीरका, गच्छ, परम्परा में जो विविध प्रकार हैं उनमें से एक ही प्रकार रहे (एक ही विधि-विधान रहे) ऐसी कल्पना करना अर्थात् अपने मूर्खता के प्रदर्शन सिवाय अन्य क्या हो सकता है ?

क्युँकि..., प्रभु आदिनाथ के 84 गणधर थे और 84 गण-गच्छ थे अर्थात् प्रभु आदिनाथ के जीवन-यापन काल में ही 84 परम्पराएँ थी। वैसे ही प्रभु महावीर के 11 गणधर थे और 9 गण-गच्छ थे अर्थात् प्रभु महावीर के वास्तव्य में ही 9 परम्पराएँ थी।

तो हे भाग्यशाली !

इस सत्य को समझ कि गायों के वर्ण-रंग में भिन्नता हो तो उसमें शंका नहीं होनी चाहिए क्युँकि भिन्न-भिन्न रंगों की गाय होने पर भी उन सभी का दूध तो सफेद ही आता है।

एकता का सूत्र यह 'एकता' के शब्दार्थ को नहीं तात्पर्यार्थ को समझना चाहिए।

सभी को एकत्रित करने से कुछ प्राप्त नहीं होनेवाला है।

जैसे चित्र की कलाकृति में यथास्थान योग्य रूप से विविध रंगों का होना चित्र की शोभा बढ़ाता है...

जैसे उद्यान भी विविध जाति के पुष्पों से ही महकता हुआ रमणीय लगता है...

जैसे भोजन में षडरस की विविधता से ही स्वाद का आनंद आता है...

जैसे संगीत में सात सुरों के सरगम से ही हम झूम उठते हैं...

बस...,

ठीक वैसे ही जिनशासन की विविध परंपरा – सामाचारी का संवाद और समन्वय करना सीखें। इसी प्रकार जिनशासन की विविध परंपरा की आराधना शासन की शोभा में अभिवृद्धि करेगी। केवल एक मंच पर दिखावे के लिए सबको इकट्ठा करने से... एकत्रित करने से कुछ महान सिद्धि प्राप्त नहीं होनेवाली है।

मैं किसी भी प्रकार के एकता का विरोधी नहीं हूँ किन्तु एकता के दाम्भिकता का विरोधी हूँ।

एकता यह तात्पर्यार्थ मिश्रण नहीं अपितु मैत्री है। कौन सही है वा कौन गलत है इसके लिए वाद-विवाद नहीं करना चाहिए।

साधु-साध्वीयों की वेयावच्च, साधर्मिक भक्ति, तीर्थ-रक्षा, धर्मद्रव्य-रक्षा, आचार-परम्परा की सुरक्षा ऐसे गम्भीर विषयों पर सभी को एक साथ आवाज उठाना चाहिए।

ऐसी एकता निश्चित ही शासन का अभ्युदय करेगी।

"सङ्घे शक्तिः कलौ युगे।"

जिनशासन की वर्तमान में जो विविधता है उसे सद्भाव से स्वीकार कर "हम सब एक हैं।" यह भावना इस कलियुग में धर्म रक्षा कर सकेगी।

अब आगे के लेख में "Unity" की व्याख्या विस्तारपूर्वक समझेंगे।

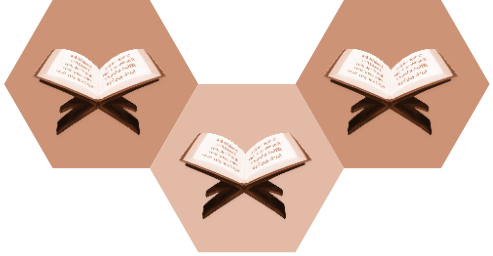

माहिती v/s ज्ञान

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

हेलो फ्रेन्ड्स!

अरिहंत बनने की यात्रा में हम अग्रेसर है।

संसार में कभी भी कोई भी व्यक्ति अपनी सफलता का रहस्य किसी को भी बताना नहीं चाहता। परंतु वह उस राज़ को हमेशा छिपाने का प्रयास करता है। उसके पीछे एक यही कारण होता है, कि सफलता प्राप्त व्यक्ति एकमेव व अद्वितीय बनना चाहता है, यदि संसार में उसके जैसे अनेक व्यक्ति हो जाएंगे, तो उसकी अद्वितीयता खण्डित हो जाएगी, एवं उसके चाहने वाले बँट जाएंगे, अतः उसकी मंशा रहती है, कि वह अकेला ही सबसे अग्रिम व सुप्रिम स्थान पर रहे।

परंतु, जिनशासन के सर्वोच्च पद पर आसीन सर्वसत्ताधीश धर्मचक्रवर्ती महाराजाधिराज श्री अरिहंत परमात्मा खुद अरिहंत परमात्मा पदवी प्राप्त करने के बाद भी उस मंजिल तक पहुँचने का मार्ग जन-जन से छिपाकर नहीं रखते, अपितु वह तो जन-जन के समक्ष उस मार्ग को प्रकट करते है, खुद कहते है, जाहिर करते है, कि यह रास्ता तुम्हें अरिहंत बना सकता है।

अरिहंत प्रभु की पराकाष्ठा की उदारता व करुणा तो देखो, कि वह संसार के समग्र जीवों को खुद के जैसा बनाना चाहते है। अतः वो खुद अरिहंत बनने का रास्ता, अपनी सफलता का रहस्य इन्हीं बीस स्थानकों को बताते है। वे कहते है - ओ संसार के जीव! आप इन बीस स्थानकों की आराधना-उपासना करें, उनके प्रति भक्ति व बहुमान रखें, तब आप भी अवश्यमेव मेरे जैसे ही अरिहंत बन पाओगे।

अरिहंत प्रभुने स्वयं बताई हुई एकदम खरी ऐसी अरिहंत बनने की फॉर्म्युला का आठवाँ चरण - "ज्ञान पद।"

ज्ञान (Knowledge) और माहिती (Information) - दोनों के बीच बड़ी ही पतली सी भेद-रेखा पड़ती है।

- जो बुद्धि की शक्ति को बढ़ाये वह माहिती,
  जो आत्मा की समृद्धि को बढ़ाए वह ज्ञान।
- जो उपयोग करना सिखाए वह माहिती और
  जो उपयोगी बनना सिखाए वह ज्ञान।
- जो भोगी बनाए वह माहिती और
  जो योगी बनाए वह ज्ञान।
- जो पदार्थों का उपभोग सिखाए वह माहिती,
  ओर जो पदार्थों का त्याग सिखाए वह ज्ञान।

किसी का मोबाइल रीपेर करने के लिए आपके पास माहिती चाहिए, पर किसी के मन को एवं किसी के रिश्ते को रीपेर करना हो, तो ज्ञान के शरण में जाना होगा।

वस्तु कैसे बनाना, कैसे चलाना, सिखाएगी माहिती, व्यक्ति के साथ कैसे जुड़ना व कैसे उसके साथ जीवन जीना, और आखिर में खुद कैसा व्यक्ति बनना वह ज्ञान सिखाएगा।

आज संसार में ज्ञान से ज्यादा माहिती की बोल बाला है, इसी कारण, खून है, रेप है, दंगे-फसाद है, संबंध विच्छेद है, अपनों के साथ परायों जैसा बर्ताव है। ज्ञान की उपेक्षा होने से जोर जुल्म है, आतंकवाद है, युद्ध है, विश्वासघात है, कलह है, प्रपंच है।

इसी कारण कहूँगा कि ज्ञानी बनें, सिर्फ कोरी और सूखी माहिती से क्या हाथ लगेगा? कुछ भी नहीं।

हाँ, माहिती से लोग प्रभावित होंगे, पर परमात्मा... कभी नहीं। चलिए, ज्ञान धन को अर्जित करने के राह पर कुछ कदम चलें साथ-साथ।

और फिर यह एक गीत गुनगुनायें साथ-साथ।

।। ज्ञान पद ।।

(तर्ज : फूलों सा चेहरा तेरा...)

जीवन की समस्याओं का मिलता समाधान है;
आगम का ज्ञान वो, तत्त्वों की खान है, जैनों का अभिमान है...

तारे है तुमने लाखों करोड़ों, अब मेरी बारी कब आयेगी?;
तेरी कृपा से उज्जड जीवन में, खुशियों की बारिश बरस जायेगी;
छाया है अंधेरा, दुःख ने डाला डेरा, कोई नहीं मेरा, सिर्फ तेरे बिना;
तू मुझे निहाले, आत्मा को निखारे, कर्म को निकाले और शुद्ध बना दे;
तुझमें है वो ताकत भरी, ये मेरा विश्वास है... आगम...(1)

दुःख तो कट जाए, दुर्गुण भी भागे, जो तेरी किरपा हमें मिल गई;
तेरी मदद से मुक्ति किनारे, मेरे जीवन की नौका चल पडी;
तूने मुझे चाहा, भाग्य मेरा जागा, इस अभागी का, दीदार फिर गया;
जग का ज्ञान जूठा, उस पे मैं हूँ रूठा, शुद्ध ज्ञान का मुझे वरदान मिल गया;
मैं पापी बना परमातमा, तेरा चमत्कार है... आगम...(2)

शत्रु भी सुखी बने

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

"शत्रुजनाः सुखिनः समे"

नेल्सन मंड़ेला साउथ आफ्रिका के सिवील राईट्स के लिए व्हाईट रेजीन 'पी.डबल्यु ओथा' कि जो साउथ आफ्रिका के प्रेसीडेन्ट थे, उनके सामने अहिंसक लड़त चालू की। गांधीजी के जैसे 'फ्रीडम फाईटर' बने।

सरकार ने उन्हें जेल में डाल दिया। 10"x10" से भी छोटी कोठरी में 27 साल रहे। दुनिया की सात अबज की बस्ती में एक व्यक्ति ने शायद सबसे ज्यादा दुःख देखा हो तो वह नेल्सन मंडेला ने देखा है।

27 साल आपको जेल में अकेला रखे, कोई आपके सामने देखें नहीं। कोई आपके साथ बोले नहीं, तब इन्सान पागल हो जाता है। आजकल के युवकों के हाथ से एक घंटे के लिए भी मोबाइल ले लेंगे तो वे भी पागल हो जाते है। क्योंकि हर तीन मिनट पर Consiously याँ Unconsiously आपका हाथ फोन पर ना जाये तो आपका Discharging होता है। तो नेल्सन मंडेला तो 27 साल जेल में रहे, फिर भी नेल्सन मंडेला अपने मन को स्थिर रख सके - कौन सी वजह से? Think. कौन से विचार से?

Nelson Mandela

नेल्सन मंडेला ने सोचा - "कभी भी मुझे मेरे मन की स्वस्थता गँवानी नहीं है। भगवान ने मुझे ऐसा समय जिंदगी में दिया है तो मैं अच्छे पुस्तकों का वाचन करूँगा। और उसमें से प्राप्त हुए अच्छे विचारो का लेखन करूँगा। और जेल से बाहर निकलकर उसका प्रकाशन करूँगा।"

27 साल के बाद उन्हें जेल से मुक्ति मिली। उनके अभिवादन करने के लिए हजारों लोग उपस्थित थे। न्यूज रीपोर्टर ने पूछा, "सरकार की नीति अनुसार अब तमाम अश्वेतो को भी वोटींग-मत मिले है, और अब तय ही है कि, आप ही सर्वानुमत से जीतोगे। और साउथ आफ्रिका के प्रेसीडेन्ट बनोगे।" क्योंकि श्वेत से अश्वेत 15% ज्यादा थे।

नेल्सन मंडेला ने कहाँ, "हाँ! 100% हम ही जीतेंगे।"

न्यूज रीपोर्टर ने फिर से पूछा, "तो

साउथ आफ्रिका के प्रेसीडेन्ट बनने के बाद आपको 27 साल जेल में रखने वाले श्वेत प्रेसीडेन्ट 'पी. डबल्यु ओथा' के साथ आप कैसा व्यवहार करेंगे? उनके प्रति कौन-कौन सी प्रतिक्रियाएं दिखायेंगे और उनके प्रति कौन-कौन से कानून लागू करोगे? कौन-कौन से श्वेच लोगों के देश छोड़कर जाना पड़ेगा?"

अब यहाँ नेल्सन मंडेला का Think Beyond देखो। हमारे साथ किसी ने अन्याय किया हो, अपमान, अवगणना, उपेक्षा याँ अनाधिकृत सजा दिलायी हो। तो हम तो राह देखेंगे कि कब मौका मिले और कब बदला लूँ? यह सामान्य विचार है। इसे कहते है - Think Routine.

नेल्सन मंडेला कहते है - I don't have any cruch. मुझे किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं है। हम सरकार बनायेंगे तब, हमें देश चलाने का अनुभव कम है, इसलिए पी. डबल्यु ओथा को और उनके मिनिस्टर को सरकार में साथ रखेंगे। और हम साथ रहकर देश का विकास करेंगे।

ऐसा ही हुआ। इलेक्शन में नेल्सन मंडेला Massive Victory के साथ जीते। 90 वर्ष की उम्र में साउथ आफ्रिका के प्रेसीडेन्ट बने। पी. डबल्यु औथा को ओफर दिया, "आप Deputy" की पोस्ट में मेरी ओफिस में साथ रहो, मुझे मार्ग-दर्शन देते रहो, जिससे हम साथ रहकर देश का विकास करेंगे। नेल्सन मंडेला की जगह पर हम होंगे तो पी. डबल्यु ओथा के साथ कैसा व्यवहार करेंगे?

नेल्सन मंडेला ने पाँच वर्ष सरकार चलायी, फिर रिटायर हुए और जब उनकी मृत्यु हूई तब दुनिया भर के प्रेसीडेन्ट, धर्मगुरु, और बड़ी-बड़ी हस्तियाँ आयी थी। क्यों?

"नेल्सन ने अलग सोचा तो दुनिया के लोगों से अलग बने।" ऊंचा सोचा तो दुनिया के लोगों से ऊंचे बने।

पूज्यपाद सिद्धांत दिवाकर गच्छाधिपति श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा. को एक शिष्य ने पूछा - साहेब! आप के मन में कौन सा विचार कभी नहीं आया है?

साहेब ने कहाँ, "किसी का अहित हो जाए ऐसा विचार मुझे कभी भी नहीं आया है।"

"स्पर्धक और दुश्मन का भी अहित क्यों चाहना?"

चलिये, हम संकल्प करते है कि - मैं दुनिया से अलग सोचूँगा, मेरे स्पर्धक और दुश्मन भी सुखी हो जाये, ऐसी भावना करूँगा।

चलो, हमारे कॉम्पीटीटर-स्पर्धक के लिए भगवान को प्रार्थना करते है कि,

'हे भगवान! उनको जल्दी Success मिले!'

Temper : A Terror – 6

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

(अपने मित्र की इच्छा पूर्ण करने एवं यह स्त्री कौन है उसका पता लगाने के लिए मित्रानंद सोपारक नगर में शूरदेव सूत्रकार के पास जाता है। उसके बाद क्या हुआ आगे पढ़िए...)

पवन से भी वेगवान साँडनी के उपर मित्रानन्द ने अच्छा खासा अंतर काट लिया। उसे अपना लक्ष्य मिल चूका था - अवन्ती!

सूत्रकार शूरदेव के पास से पुतली के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने मित्र अमर की इच्छा पूर्ण करने की आशा मित्रानन्द को प्रकट हुई थी।

"तू तैयार रहना... मैं कुछ ही समय में आकर मेरे मंदिर को बनाने के लिए तुझे अमरपुर ले जाउँगा..." मित्रानन्द के विश्वास को देखकर खुद को काम मिल जाएगा, यह बात शूरदेव को दृढ़ हो गई थी। उसने वेगवंती साँडनी भी दे दी थी।

वह पुतली की सारी जानकारी शूरदेव ने सहज ही दे दी थी। मित्रानन्द को काम कठिन लगा था, पर अशक्य नहीं।

दूर-सुदूर बड़ा क़िला दिखाई दिया। रात होने के कारण उसके उपर मशालें प्रज्वल्लित हो रही थी। बाहर मंदिर जैसा कुछ दिख रहा था।

"बस!... अब थोडा ही है, फिर तू शांति से आराम करना..." नीचे झुककर लगाम छोड़ते हुए साँडनी के कान में कहाँ। सांडनी अपनी गति बढ़ा दी। मित्रानन्द की आखों में एक अजेय विश्वास छलक उठा।

देवदुंदुभी को भी पीछे छोड दे ऐसा नगाड़ा नगर में बज रहा था। “सुनो... सुनो... सुनो...” की बुलंद आवाज में एक घोषणा करने वाला घोषणा कर रहा था।

मित्रानन्द अपनी नींद से जबक गया। ढोल की आवाज उसके कानों को त्रास दे रही थी। वह देवकुल के बाहर जाकर खड़ा रहा।

उस नगर के दरवाजे को देखते ही खुद की अवस्था याद आ गई। कल रात क़िले का दरवाजा बंद हो जाने से वह देवकुल में अकेला ही रह गया था। यह देवकुल की प्रसिद्धि बहुत

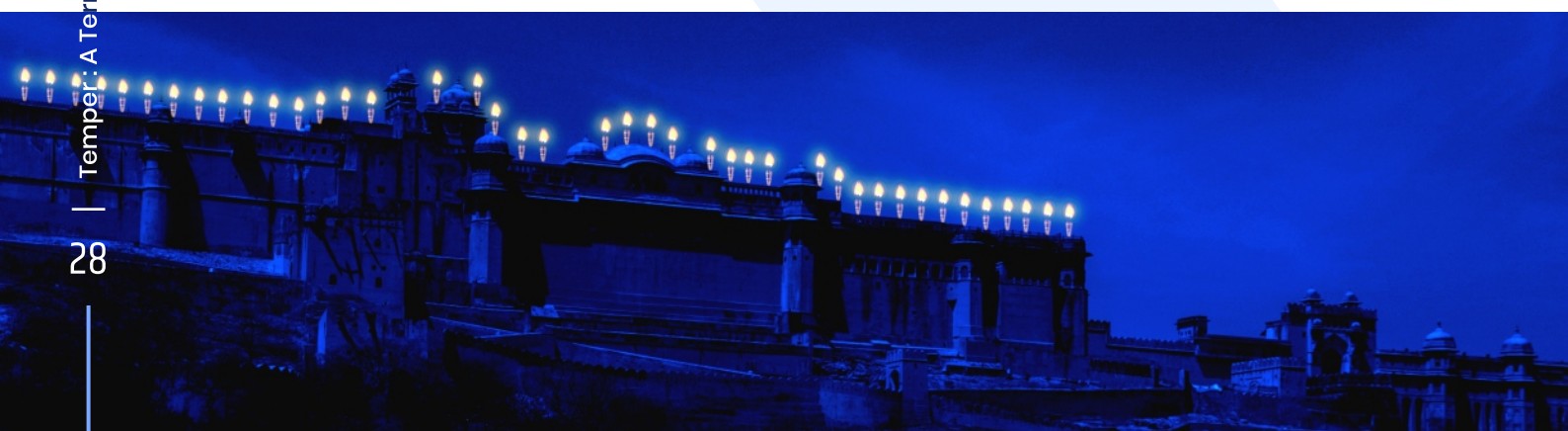

खराब थी। यहां सोने वालो में से बहुत कम सुबह में फिर से उठते हैं। उसमें बेताल का उपद्रव था। ऐसी लोकवार्ता थी।

मित्रानन्द ने अपनी आंखें मसली। फिर से ढोल की कर्कश आवाज कान में पड़ी। "सुनो... सुनो... सुनो... जो इस मृतक को धारण करेगा उसे हम 1000 दीनार देंगे।" मित्रानन्द ने घोषणा करने वाले की ओर देखा। उसके आगे एक मृतक को गाड़े में रखा गया था। वह बहुत ही भयानक था। अंधेरा होने से वह काला-काला दिख रहा था।

"इसमें कौन सी बड़ी बात है?" मित्रानन्द के दिमाग में ऐसा विचार आया।

मित्रानन्द घोषणा करने वाले के पास गया, और उसके नगाड़े को हाथ लगाकर कहा "मैं यह कार्य को स्वीकार करता हूं।"

घोषणा करने वाले ने ऊपर की ओर देखा। उसकी आंखों में भय दिखा।

आग की तरह मृतकरक्षा की बात नगर में फैल गई। लोग परस्पर बातें करने लगे और मित्रानन्द को मूर्खों का सरदार समझने लगे। "विदेशी!" शर्त रखने वाले सेठ ने मित्रानन्द की और देखा, "आपने यह क्या स्वीकारा है। यह अच्छी तरह से समझ लेना। यह मेरा नौकर आपको समझा देगा।"

एक सादे अंगवस्त्र में सज्ज जवान आदमी आगे आया।

"नमस्ते! मैं सेठ का कर्मक नाम का नौकर हूं..." वह प्रणाम के लिए जमीन तक नीचे झुका। मित्रानन्द को उसको देखकर हंसी आयी।

"इसमें हंसने जैसा कुछ नहीं है, क्योंकि आपने जो स्वीकारा है... वो..." नौकर की आंखें भय से फटी रह गई। "ये तो मौत को सामने से आमंत्रण देने जैसा है।"

"क्यों?" मित्रानन्द को उसकी बात में तथ्य लगा।

"यहां पिछले कई समय से शाम ढलने पर नगर के दरवाजे बंद हो जाते हैं। और फिर भयंकर घटनाएं घटती हैं। शाम को एक व्यक्ति की लाश गिरती है। और रात को..."

आजूबाजू के लोग थर-थर कांपने लगे।

"और रात को मारकर उस लाश को..." कर्मक ने अपने शब्द निगल लिये...

"खा जाता है। और इसीलिए ही..." कर्मक ने थोड़ी आवाज़ धीमी कर दी।

"तेरे बीवी-बच्चे, मां-बाप मर गए हो और दिमाग में राई बहुत ज्यादा भर गई हो तो ही यह चीज को स्वीकार करना। अभी भी तेरे पास मौका है, बोल..."

मित्रानन्द ने कर्मक की और देखा।

"इतनी तुच्छ बातें तो है ना, किसी चूड़ी पहने हुए नामर्द को करना... तूने अमरपुर के वासियों की मर्दानगी देखी नहीं है..."

कर्मक नीचे देखता रहा।

भूतबंगले जैसा सुनकार आज पूरे नगर में व्याप्त था। अभी तो रात्रि का पहला प्रहर ही बीता था। पर राजमार्ग पर एक चिड़िया तक दिखाई नहीं दे रही थी।

मित्रानन्द अपने अंगवस्त्र में बाँधी हुई पोटली को छू-छू कर खुश हो रहा था। सुबह मृतक के परिवार के सेठ ने 500 दीनार दे दिये थे।

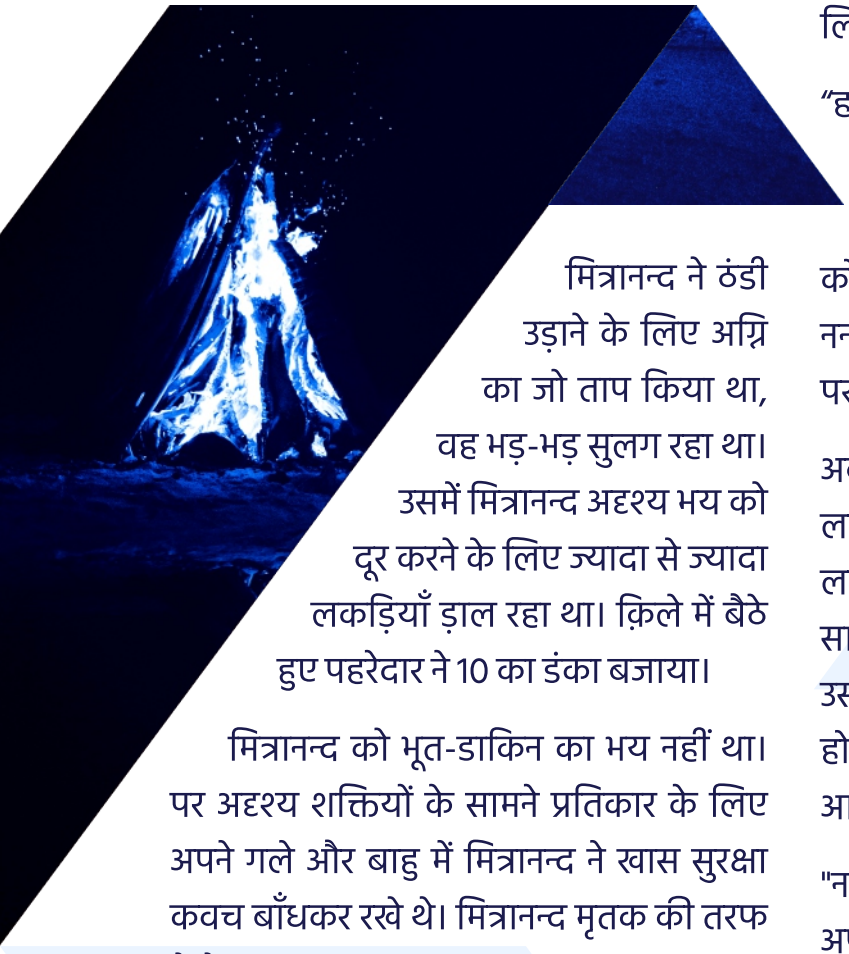

मित्रानन्द ने ठंडी उड़ाने के लिए अग्नि का जो ताप किया था, वह भड़-भड़ सुलग रहा था। उसमें मित्रानन्द अदृश्य भय को दूर करने के लिए ज्यादा से ज्यादा लकड़ियाँ ड़ाल रहा था। क़िले में बैठे हुए पहरेदार ने 10 का डंका बजाया।

मित्रानन्द को भूत-डाकिन का भय नहीं था। पर अदृश्य शक्तियों के सामने प्रतिकार के लिए अपने गले और बाहु में मित्रानन्द ने खास सुरक्षा कवच बाँधकर रखे थे। मित्रानन्द मृतक की तरफ देखे जा रहा था।

ऐसे इस तरह से हर रोज मृत्यु होता रहता होगा? मित्रानन्द ने दिमाग कसा, पर इसके पीछे का रहस्य पकड़ में नहीं आया। तीसरा प्रहर बीत गया। 12 का ड़ंका सुनाई दिया।

नगर के लोगो नें यही समय दरमियान मारी का आगमन बताया था। मित्रानन्द ने पेड़ की एक बड़ी ड़ाली हाथ में ली, और उसे सुलगाई। लपकती हुई आग को ड़ाली ने पकड़ा, ड़ाली भी सुलगने लगी।

पवन की आवाज सुनाई दी। कोई हँस रही हो एसी आवाज सुनाई दी। मित्रानन्द ने आवाज के उद्‌भूत स्थान दरवाजे की तरफ देखा। और वह मृतक के आसपास उस जगह पर आगे बढ़ा। भड़-भड़ जलता ताप भी ठंड़ा हो चूका था।

एक अदृश्य भय ने मित्रानन्द के हृदय को ग्रस लिया था।

“हाँ...हाँ... तू रक्षा करेगा मृतक की?... हाँ...हाँ... मैं तुझे भी जिंदा नहीं छोड़नेवाली हूँ।“ एसी आहट-आभास उसके कानों में गुँजने लगी। कोई अपना गला जोर से दबाता हो ऐसा मित्रानन्द को लगा। वो जमीन पर अपने घुटनों के बल पर बैठ गया।

अब तो मौत को ही गले लगाना है, ऐसा उसे लगने लगा। भयानक आवाजें उसके कान में गुँजने लगी। अचानक उसे अमर याद आ गया। उसके साथ बचपन में खेली हुई बाजी याद आ गयी। उसके गले की भींस कुछ कम हुई। वो फिर सें खड़े होने की मेहनत करने लगा। उसे अपना लक्ष्य याद आया।

"नहीं...नहीं...नहीं।" वह जोर से चिल्लाया और अपनी आगवाली ड़ाली को चारों और घूमायी। अदृश्य शक्ति भाग गई हो ऐसा उसे लगा।

वह थकान के कारण जमीन पर बैठ गया। उसका हृदय क्रोध की भड़-भड़ ज्वाला से सुलग रहा था। उसमें उसे अमर ही दिख रहा था।

पतंग के जैसी हिलती ड़ाली के जैसा काँपते हाथों से गृह के दरवाजे के नीचे पड़ी हुई व्यक्ति को उठाने की हिम्मत करी, वह व्यक्ति थी नहीं।

बाजू में पड़ी हुई पेड़ की ड़ाली से मृतक को पहरेदार ने आगे-पीछे किया। वह अक्षत था। शायद आज मारी ने मृतक का भक्षण नहीं किया... पहरेदार के मन यह सुझा।

"यानी कि यह आदमी ने मारी के पास से यह

मृतक की रक्षा की है। तो फिर वो रक्षा करते-करते मर गया है क्या...? पहरेदार के विचार तेज चल रहे थे।

वह नीचे पड़ी हुई रक्षण करने वाली व्यक्ति के पास पहुँचा। निर्भय होकर उसने नीचे पड़ी हुई व्यक्ति को झंझोड़ा। उसने आँखें खोली। वह खड़ा हो गया। उसका सर घूम रहा था। उसने मृतक की और देखा। एक मधुर स्मित उसके चेहरे पर छाया हुआ था।

"तू सच में भड़वीर निकला, जब मारी आती है तब तो क़िले के अंदर के हम सभी लोगों की अस्थियाँ जम जाती है।" पहरेदार ने रक्षक व्यक्ति से कहाँ।

"कुछ गरम पीने जैसा हो, तो मुझे दे दो... मुझे बहुत ठंड लग रही है..." रक्षक ने पहरेदार से कहाँ।

"यह लो... रक्षक के हाथ में पहरेदार ने मशक थमा दी। उसमें दारु भरा हुआ था। रक्षक ने अपने मुंह से मशक को लगाया। उसके हृदय में और मन में एक नवीन चेतना का संचार हुआ। उसने अपने अंगवस्त्र से अपना मुंह साफ किया।

नारियल के पेड़ की तरह अग्नि की ज्वालायें आकाश को स्पर्श कर रही थी। सेठ की आंखों में अश्रु थे, हर्ष के! कितने ही दिनों के बाद कोई मृतक का दाह अग्नि से कर सके थे। कृपा विदेशी व्यक्ति की!

श्मशान में भी उपस्थित लोग यही बात की चर्चा कर रहे थे। "गजब है! क्या बल है! राजा उसे अपने अगंरक्षक के रुप में रख लेंगे। सेठ भी उसे अच्छे-से पुरस्कार से सम्मानित करेंगे"

मित्रानन्द पीछे खड़ा-खड़ा अपने मन में एक अनूठा गर्व महसूस कर रहा था। एक अशक्य कार्य संपन्न हुआ था। सब धीरे-धीरे श्मशान से निकलने लगे। आखिर में सेठ और मित्रानन्द ही रह गये।

सेठ भी निकल रहे थे।

"सेठ...!" मित्रानन्द सेठ को जाते हुए देख रोका,

"सेठ! आपकी शर्त के मुताबिक आधे पैसे देने बाकी है।"

सेठ ने मित्रानन्द की और उपर से नीचे तक देखा। "तू कौन है और कैसै पैसे?" मरे हुए पर भी मिजबानी उड़ाने का काम करता है? शरम नहीं आती!" उत्तर सुनकर मित्रानन्द स्तब्ध हो गया। "सेठ! इस मृतक को आप जो जला सके हो ना?" "अय!" सेठ की आँखें लाल हो गई। "मुंह बंध कर, वरना तेरी भी लाश यहाँ गिर जाएगी। पैसे माँगने निकला है? देखा बड़ा!" सेठ ने जमीन पर थूक दिया।

मित्रानन्द का गुस्सा अब आसमान छू रहा था। उसने जमीन से हाथ में मिट्टी उठायी। "नालायक! चोर सेठ! तेरा नाम बड़ा है, पर तेरा काम चांड़ाल जैसा है। मैं तेरी मिट्टी पर ही संकल्प करता हूँ कि यदि मैंने राजसभा के समक्ष यह पैसे वसूल ना किया तो मेरा नाम मित्रानन्द नहीं!" मित्रानन्द ने मिट्टी को जमीन पर फेंक दिया। **(क्रमशः)**

LEARNING
MAKES A MAN
PERFECT

VISIT US
www.faithbook.in
FaithbookOnline

- "Faithbook" नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को "Faithbook" नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से "Faithbook" के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम् ।

SAYYAM GRAPHICS
80878 75828 | 92704 56160